Rupali Mishra

21 Jan 1986

05:12 PM

Kanpur

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 113307301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**21/01/1986**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**17:12:00 घंटे**
इष्ट	25:35:40 घटी
स्थान	**Kanpur**
राज्य	Uttar Pradesh
देश	India

अक्षांश	26:26:59 उत्तर
रेखांश	80:19:54 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:08:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	17:03:19 घंटे
वेलान्तर	-00:11:15 घंटे
साम्पातिक काल	01:05:31 घंटे
सूर्योदय	06:57:43 घंटे
सूर्यास्त	17:42:19 घंटे
दिनमान	10:44:36 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	07:28:55 मकर
लग्न के अंश	01:47:22 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी	**वृष - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**रोहिणी - 2**
नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
योग	ब्रह्म
करण	विष्टि
गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वा-वाणी
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1907	माघ	1
पंजाबी	संवत : 2042	माघ	8
बंगाली	सन् : 1392	माघ	7
तमिल	संवत : 2042	थई	8
केरल	कोल्लम : 1161	मकरम	8
नेपाली	संवत : 2042	माघ	8
चैत्रादि	संवत : 2042	पौष	शुक्ल 11
कार्तिकादि	संवत : 2042	पौष	शुक्ल 11

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 11
तिथि समाप्ति काल _____: 24:54:15
जन्म तिथि _____: 11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: रोहिणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 07:57:55 घंटे
जन्म योग _____: रोहिणी
सूर्योदय कालीन योग ____: शुक्ल
योग समाप्ति काल _____: 10:46:02 घंटे
जन्म योग _____: ब्रह्म
सूर्योदय कालीन करण ____: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 11:41:31 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 30:11:56
भभोग _____: 67:06:43
भोग्य दशा काल _____: चंद्र 5 वर्ष 6 मा 6 दि

घात चक्र

मास _____: मार्गशीर्ष
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: हस्त
योग _____: शुक्ल
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: वृष
सूर्य _____: वृश्चिक
चन्द्र _____: धनु
मंगल _____: धनु
बुध _____: कन्या
गुरु _____: मकर
शुक्र _____: मकर
शनि _____: तुला
राहु _____: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

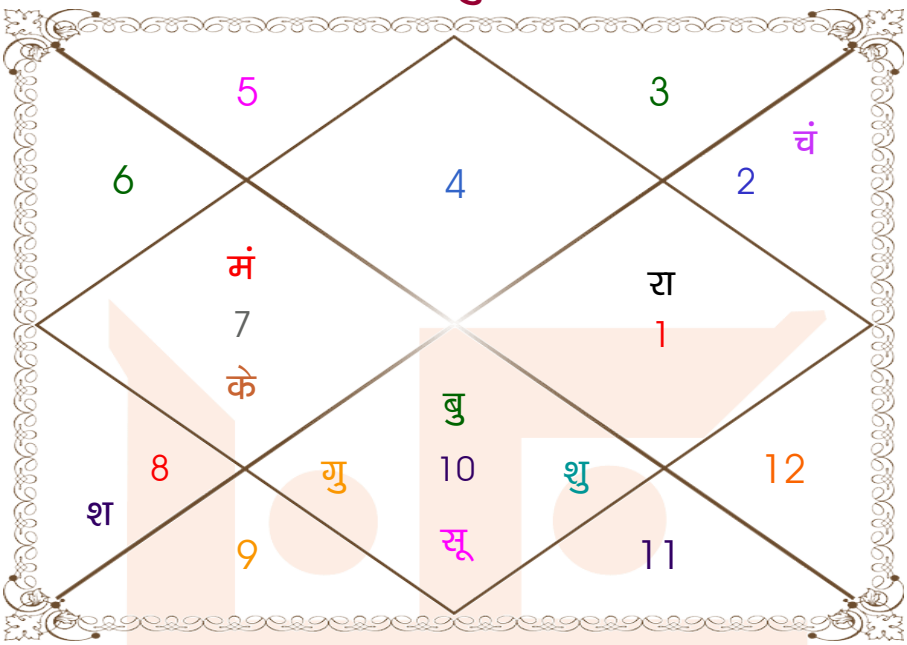

चन्द्र कुंडली

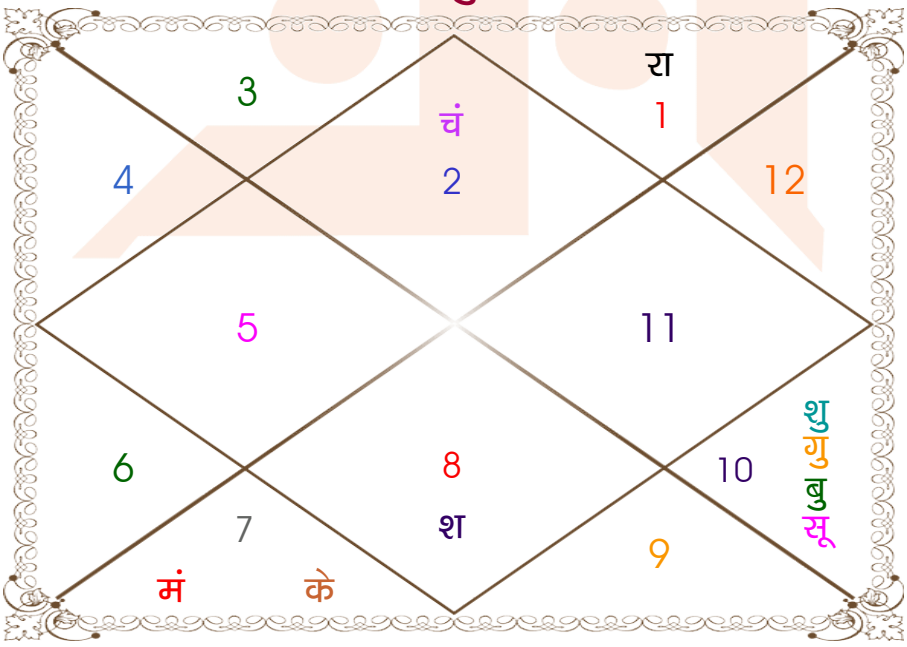

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

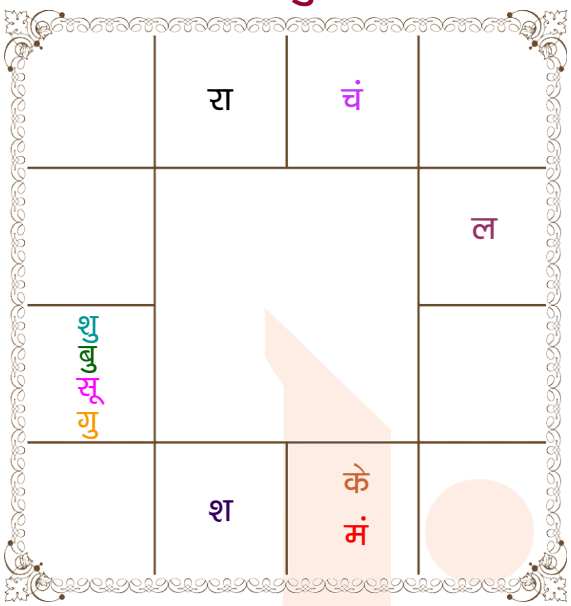

लग्न कुंडली

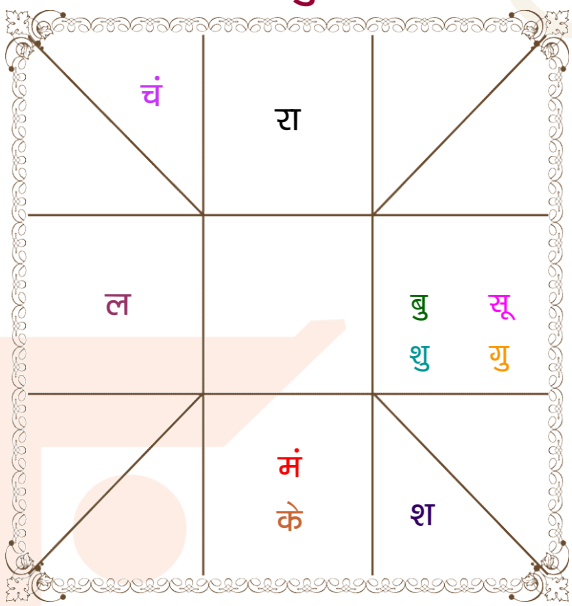

विंशोत्तरी
चन्द्र 5वर्ष 6मा 6दि

चन्द्र

21/01/1986

30/07/2101

चन्द्र	29/07/1991
मंगल	29/07/1998
राहु	28/07/2016
गुरु	28/07/2032
शनि	29/07/2051
बुध	28/07/2068
केतु	29/07/2075
शुक्र	29/07/2095
सूर्य	30/07/2101

योगिनी
सिद्धा 3वर्ष 10मा 10दि

सिद्धा

02/12/2018

02/12/2025

सिद्धा	12/04/2020
संकटा	01/11/2021
मंगला	11/01/2022
पिंगला	02/06/2022
धान्या	01/01/2023
भ्रामरी	12/10/2023
भद्रिका	02/10/2024
उल्का	02/12/2025

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	01:47:22	311:09:27	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	---
सूर्य			मक	07:28:55	01:01:02	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	शत्रु राशि
चंद्र			वृष	15:58:41	11:54:33	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण
मंगल			तुला	29:19:23	00:35:59	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	सम राशि
बुध		अ	मक	00:33:47	01:37:00	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	सम राशि
गुरु			मक	29:10:08	00:13:53	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	नीच राशि
शुक्र		अ	मक	07:55:01	01:15:25	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
शनि			वृश्चि	13:27:31	00:05:07	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	शत्रु राशि
राहु	व		मेष	11:35:16	00:05:25	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	11:35:16	00:05:25	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	सम राशि
हर्ष			वृश्चि	26:57:22	00:03:00	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	---
नेप			धनु	10:40:25	00:02:05	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	---
प्लूटो			तुला	13:36:02	00:00:40	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	---
दशम भाव			मीन	24:06:00	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	मंगल	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:36

लग्न-चलित

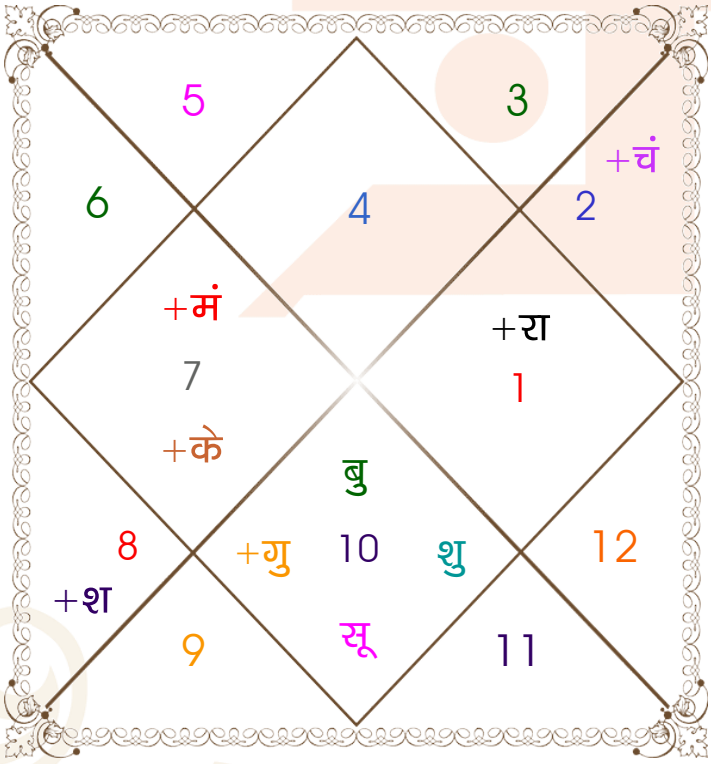

चन्द्र कुंडली

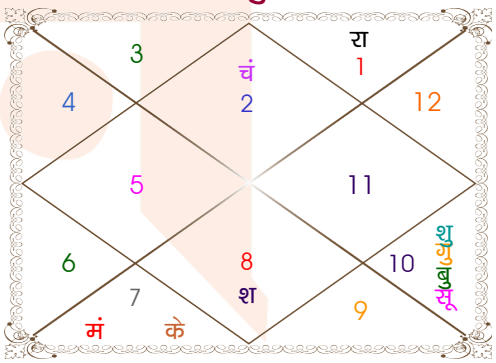

नवमांश कुंडली

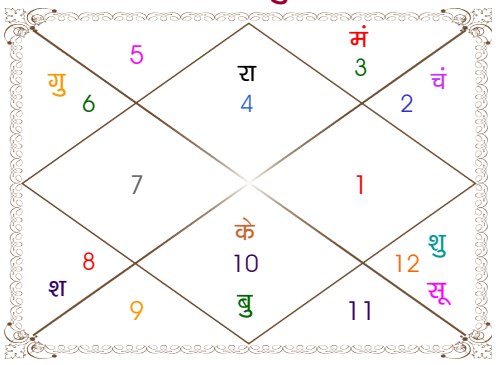

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मिथुन	15:30:28	कर्क	01:47:22
2	कर्क	15:30:28	कर्क	29:13:34
3	सिंह	12:56:41	सिंह	26:39:47
4	कन्या	10:22:53	कन्या	24:06:00
5	तुला	10:22:53	तुला	26:39:47
6	वृश्चिक	12:56:41	वृश्चिक	29:13:34
7	धनु	15:30:28	मकर	01:47:22
8	मकर	15:30:28	मकर	29:13:34
9	कुम्भ	12:56:41	कुम्भ	26:39:47
10	मीन	10:22:53	मीन	24:06:00
11	मेष	10:22:53	मेष	26:39:47
12	वृष	12:56:41	वृष	29:13:34

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	01:47:22
2	कर्क	25:26:00
3	सिंह	22:31:15
4	कन्या	24:06:00
5	तुला	28:16:56
6	धनु	01:25:28
7	मकर	01:47:22
8	मकर	25:26:00
9	कुम्भ	22:31:15
10	मीन	24:06:00
11	मेष	28:16:56
12	मिथुन	01:25:28

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली

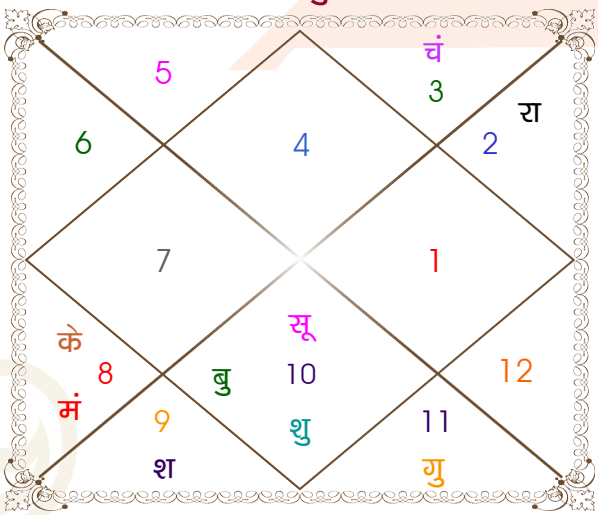

भाव कुंडली

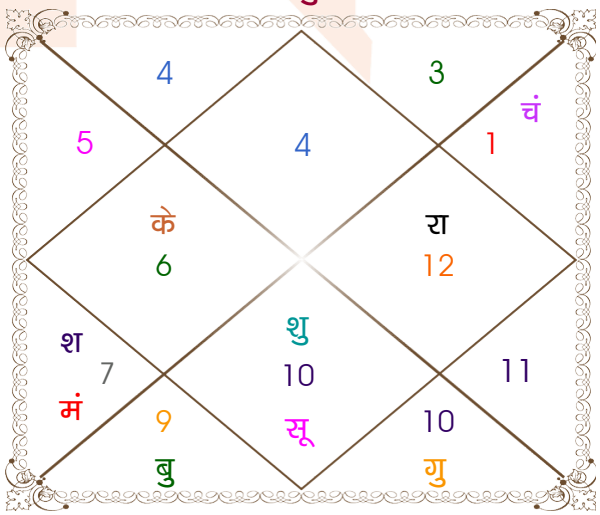

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	वृद्ध	खल	निद्रा	4.86	41 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा	स्वस्थ	शयन	16.70	55 %
मंगल	आत्मा	भ्रातृ	मृत	शक्त	भोजन	3.04	59 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	मृत	विकल	भोजन	0.00	29 %
गुरु	अमात्य	धन	बाल	भीत	निद्रा	1.13	13 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	वृद्ध	विकल	नेत्रपाणि	5.98	42 %
शनि	मातृ	आयु	युवा	खल	प्रकाश	4.35	71 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	गमन	0.00	92 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	शक्त	भोजन	0.00	92 %
कुल						36.06	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली

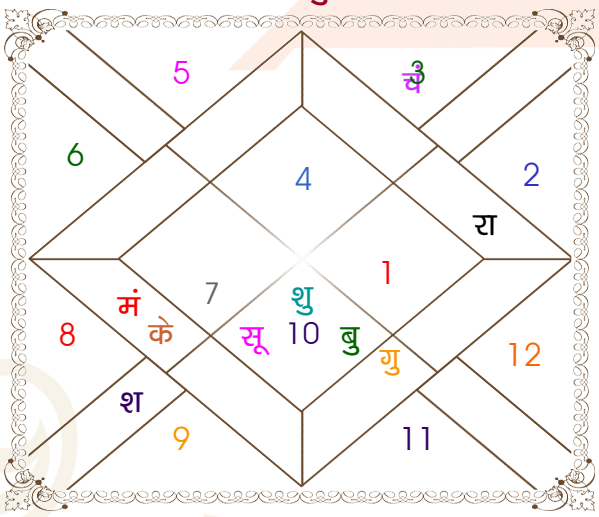

लग्न-चलित

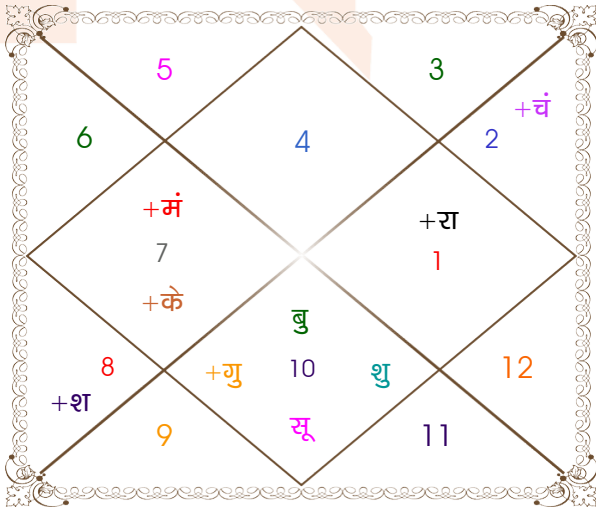

सुदर्शन चक्र

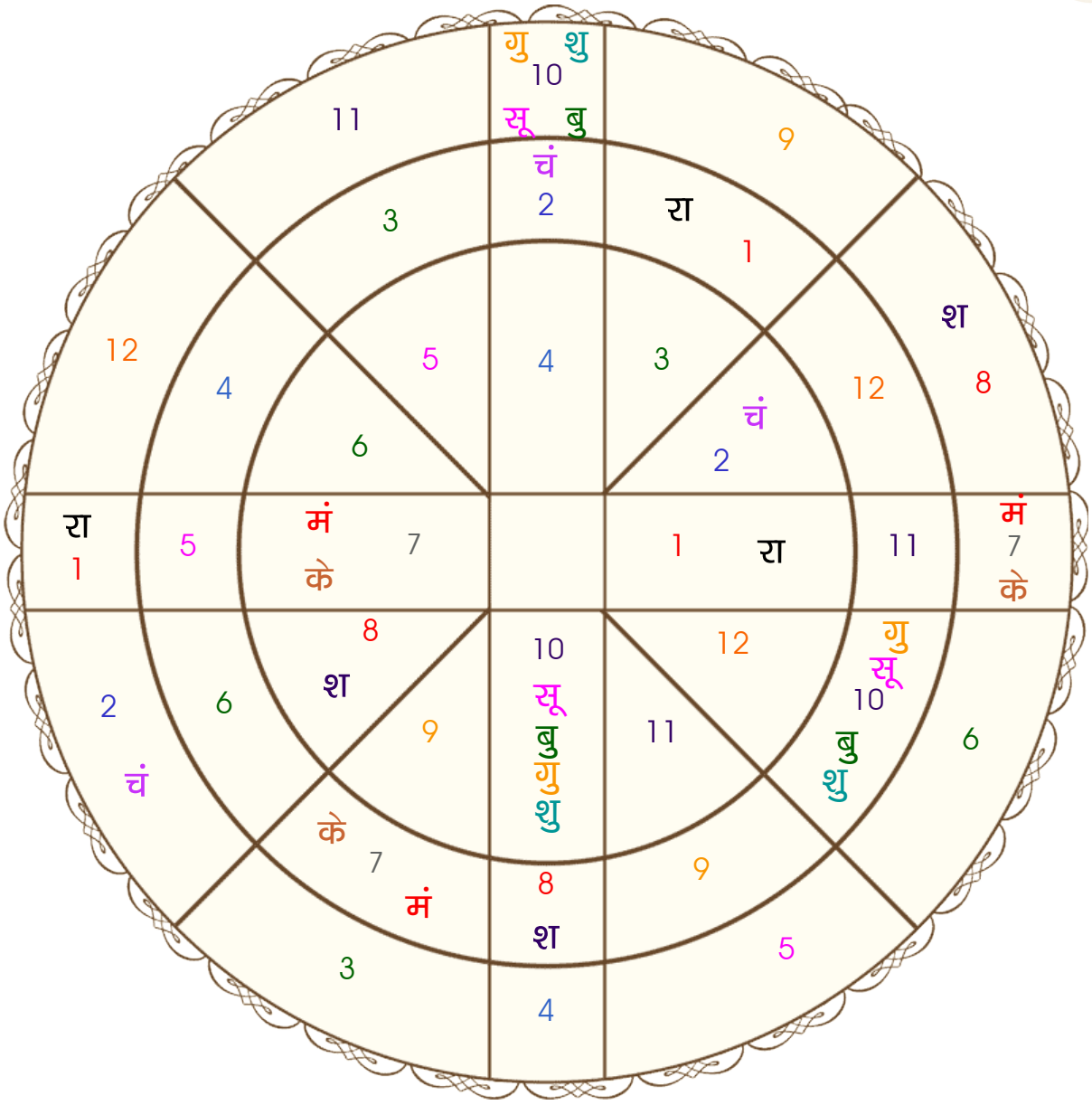

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : चन्द्र 5 वर्ष 5 मास 8 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	07:34:57	शनि	सूर्य	केतु	शनि
चंद्र		वृष	16:04:43	शुक्र	चंद्र	शनि	बुध
मंगल		तुला	29:25:25	शुक्र	गुरु	सूर्य	शुक्र
बुध		मक	00:39:49	शनि	सूर्य	राहु	शुक्र
गुरु		मक	29:16:10	शनि	मंगल	शनि	चंद्र
शुक्र		मक	08:01:04	शनि	सूर्य	शुक्र	शुक्र
शनि		वृश्चि	13:33:34	मंगल	शनि	राहु	शनि
राहु	व	मेष	11:41:19	मंगल	केतु	बुध	बुध
केतु	व	तुला	11:41:19	शुक्र	राहु	शनि	चंद्र
हर्ष		वृश्चि	27:03:25	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
नेप		धनु	10:46:28	गुरु	केतु	शनि	मंगल
प्लूटो		तुला	13:42:05	शुक्र	राहु	बुध	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कर्क	01:53:24	चंद्र	गुरु	राहु	गुरु
2	कर्क	25:32:03	चंद्र	बुध	राहु	शुक्र
3	सिंह	22:37:18	सूर्य	शुक्र	शनि	केतु
4	कन्या	24:12:02	बुध	मंगल	राहु	राहु
5	तुला	28:22:59	शुक्र	गुरु	शुक्र	बुध
6	धनु	01:31:30	गुरु	केतु	शुक्र	मंगल
7	मक	01:53:24	शनि	सूर्य	गुरु	बुध
8	मक	25:32:03	शनि	मंगल	राहु	शुक्र
9	कुंभ	22:37:18	शनि	गुरु	शनि	शुक्र
10	मीन	24:12:02	गुरु	बुध	राहु	राहु
11	मेष	28:22:59	मंगल	सूर्य	चंद्र	शुक्र
12	मिथु	01:31:30	बुध	मंगल	बुध	गुरु

के.पी. अयनांश : 23:33:33

फॉरच्युना : वृश्चिक 10:23:10

लग्न कुंडली

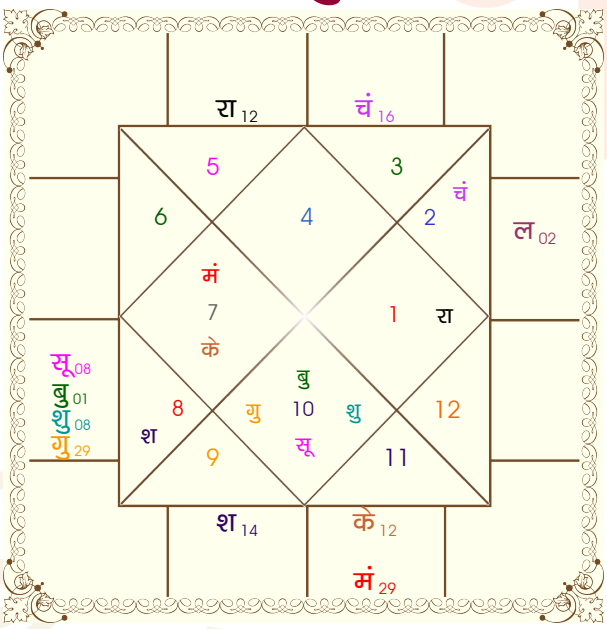

भाव कुंडली

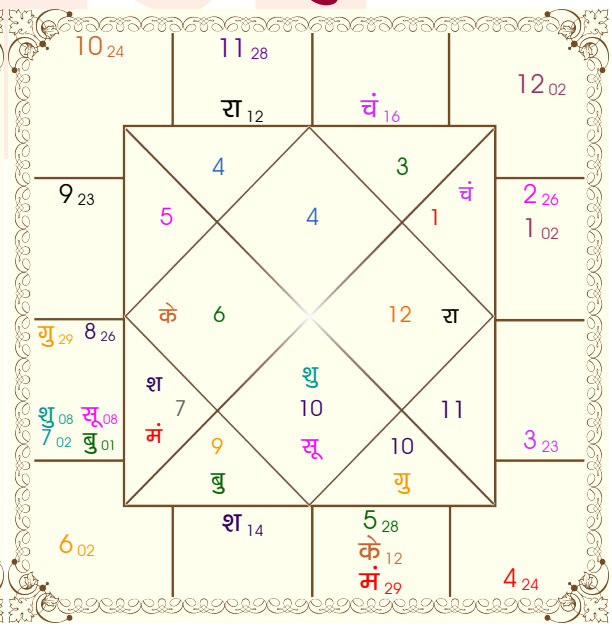

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र,
2	चंद्र,
3	सूर्य, बुध- शुक्र-
4	बुध- राहु, केतु,
5	मंगल, गुरु, शुक्र- शनि+
6	मंगल- बुध, गुरु-
7	सूर्य+ बुध, शुक्र+ शनि,
8	मंगल, गुरु, शनि,
9	शनि,
10	मंगल- गुरु- राहु, केतु,
11	चंद्र+ मंगल- गुरु-
12	बुध-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3, 7+
चंद्र	1, 2, 11+
मंगल	5, 6- 8, 10- 11-
बुध	3- 4- 6, 7, 12-
गुरु	5, 6- 8, 10- 11-
शुक्र	3- 5- 7+
शनि	5+ 7, 8, 9,
राहु	4, 10,
केतु	4, 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	चन्द्र
राशि नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	शनि

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

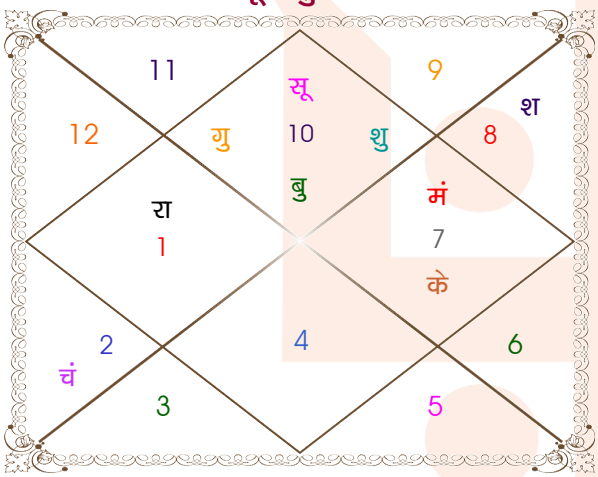

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

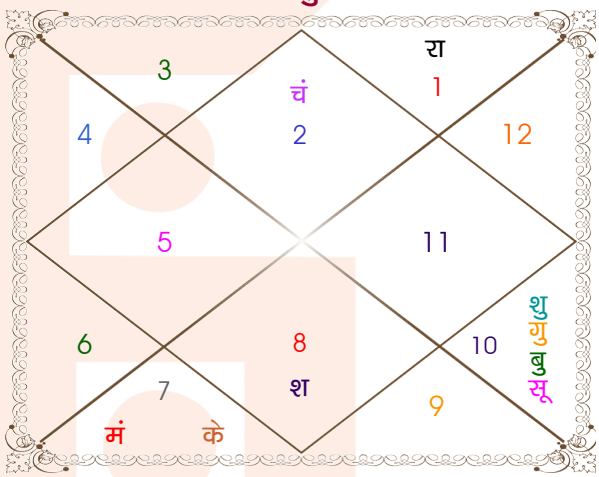

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

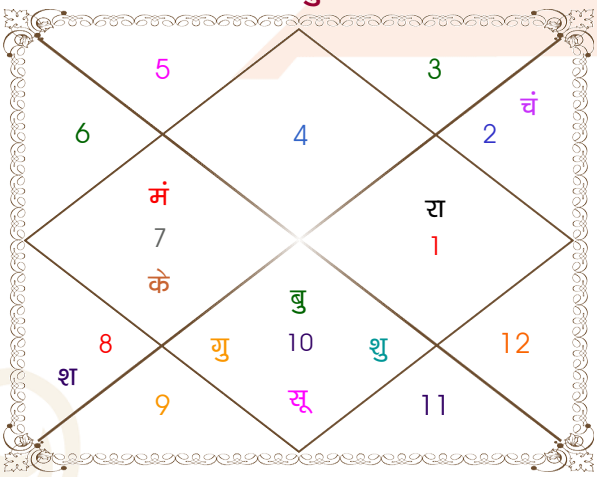

देह विचारः

होरा कुंडली

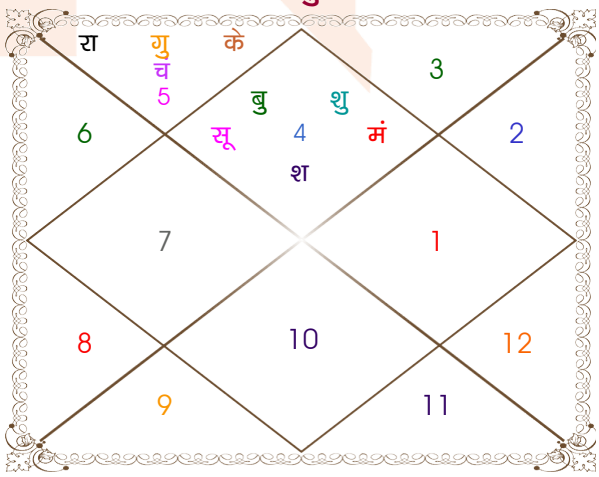

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

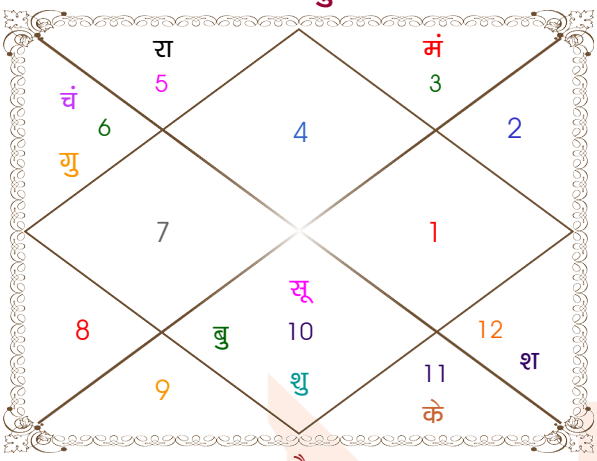

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

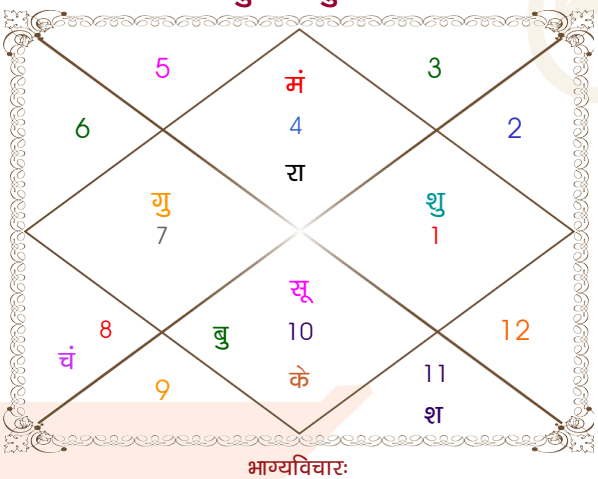

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

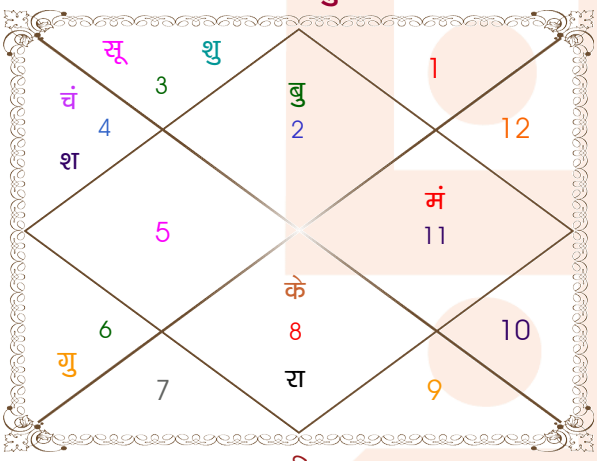

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

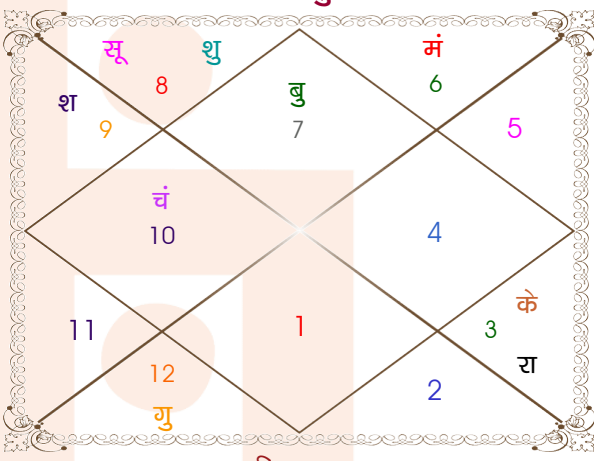

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

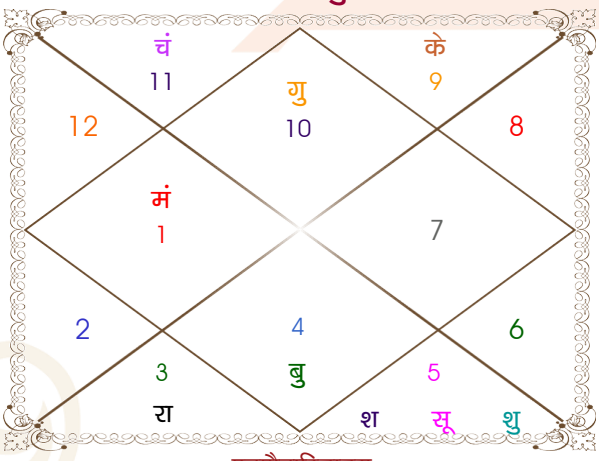

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

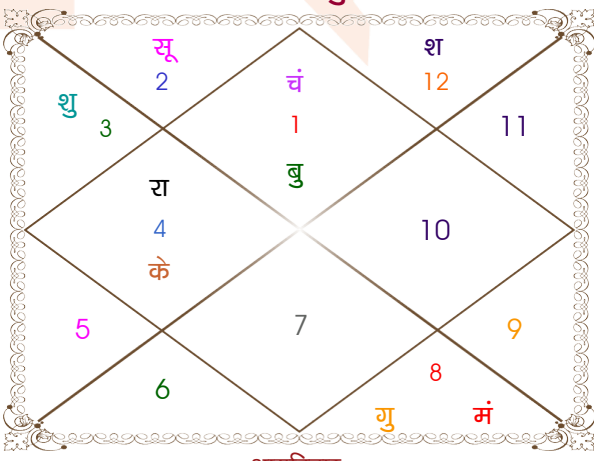

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

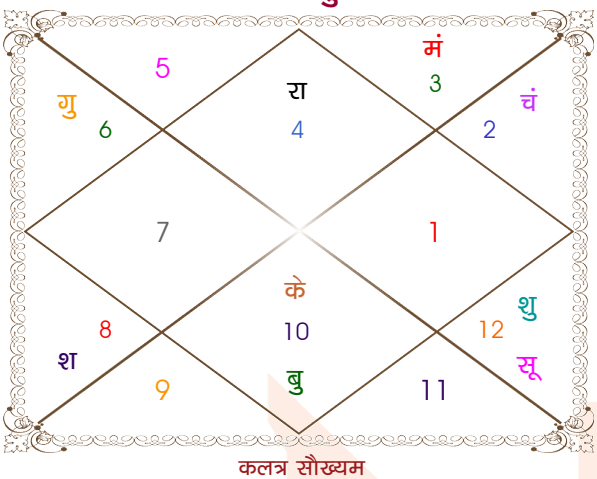

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

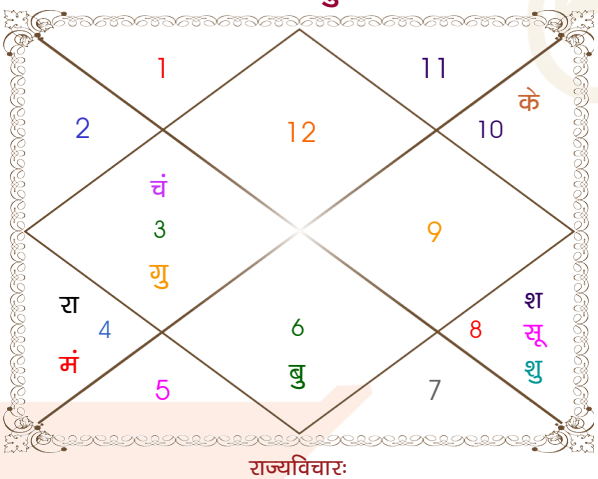

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

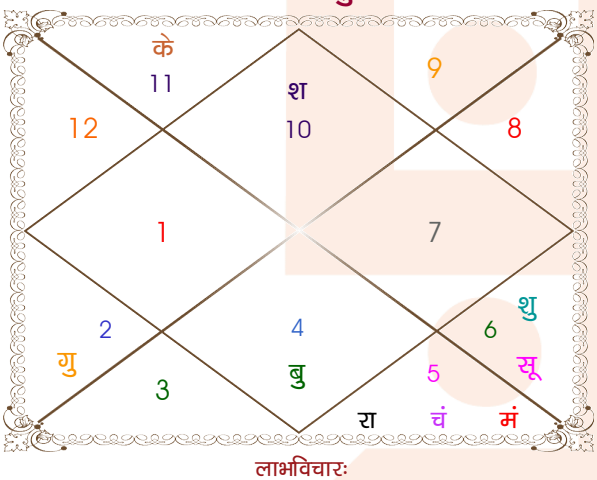

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

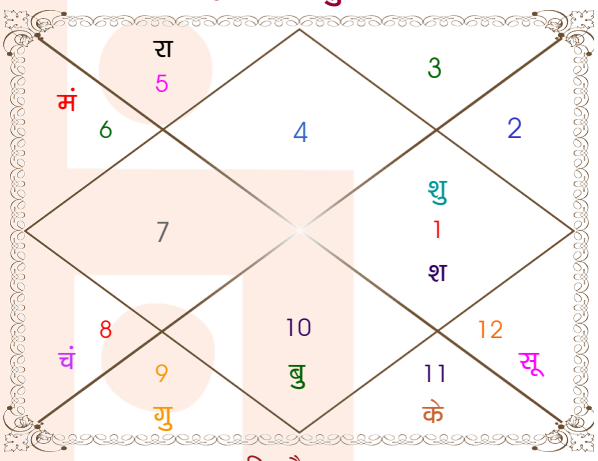

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

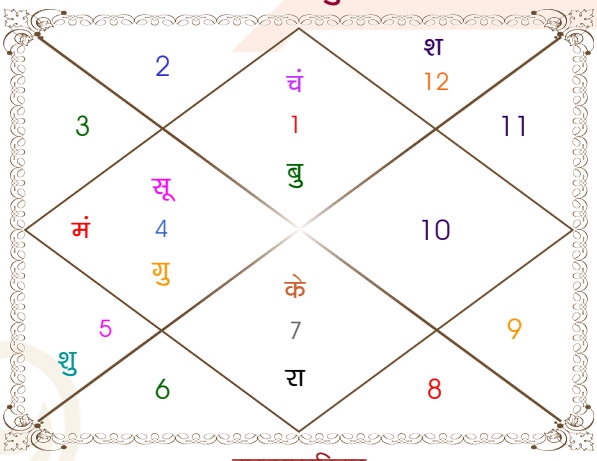

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

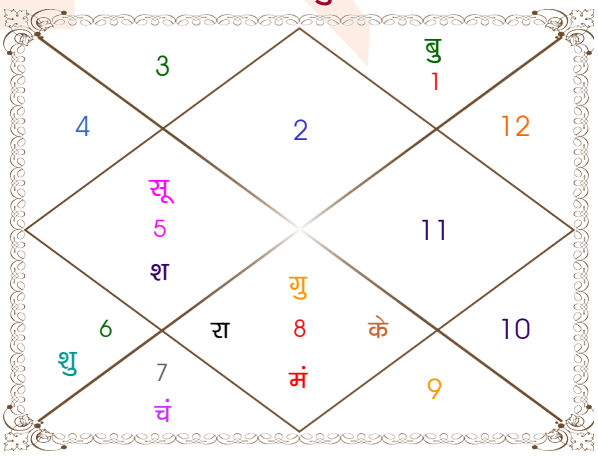

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

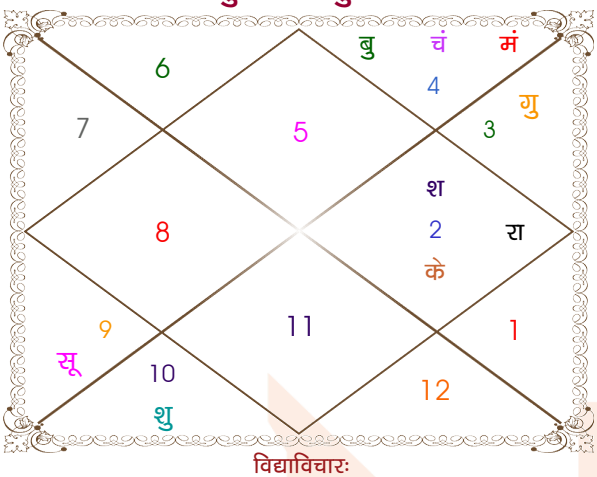

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

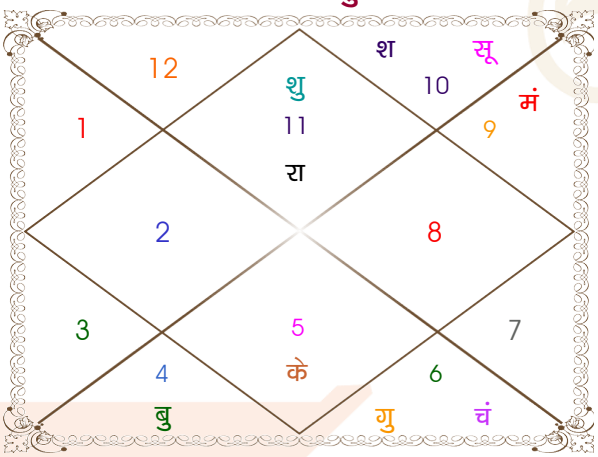

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

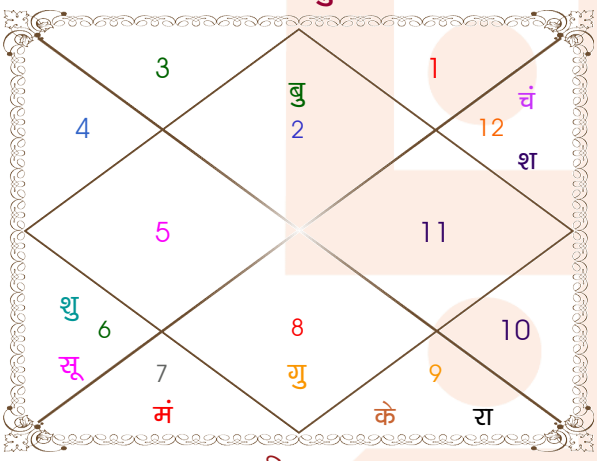

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

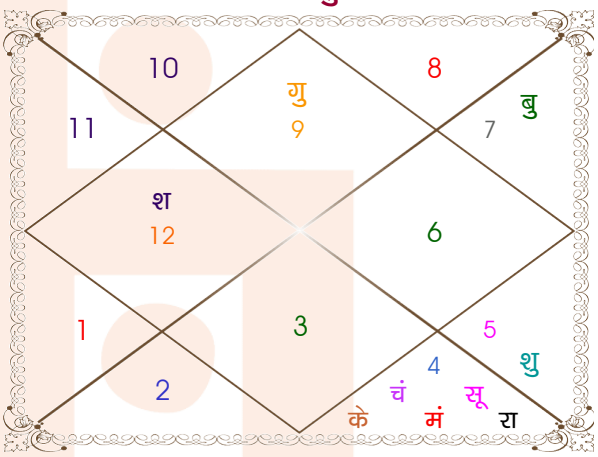

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

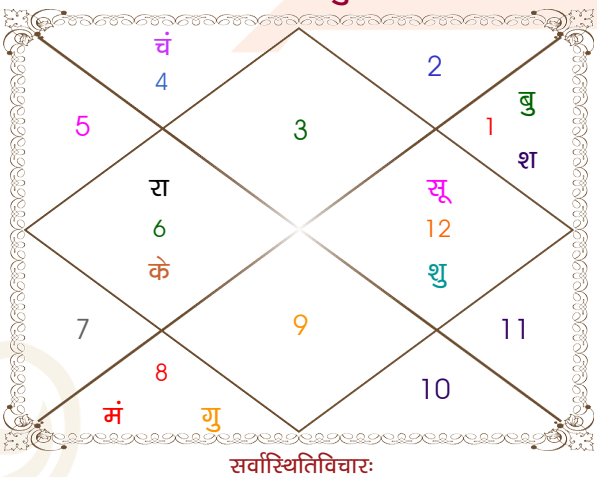

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

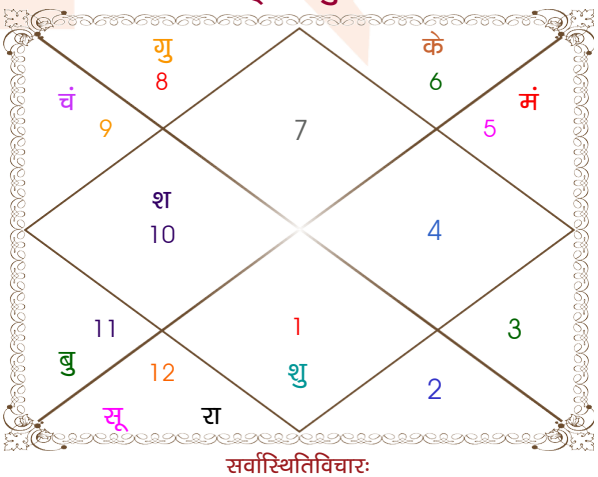

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कर्क	मक	वृष	तुला	मक	मक	मक	वृश्चि	मेष	तुला
होरा	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	कर्क	मक	कन्या	मिथु	मक	कन्या	मक	मीन	सिंह	कुंभ
चतुर्थांश	कर्क	मक	वृश्चि	कर्क	मक	तुला	मेष	कुंभ	कर्क	मक
सप्तमांश	मक	सिंह	कुंभ	मेष	कर्क	मक	सिंह	सिंह	मिथु	धनु
नवमांश	कर्क	मीन	वृष	मिथु	मक	कन्या	मीन	वृश्चि	कर्क	मक
दशमांश	मीन	वृश्चि	मिथु	कर्क	कन्या	मिथु	वृश्चि	वृश्चि	कर्क	मक
द्वादशांश	कर्क	मीन	वृश्चि	कन्या	मक	धनु	मेष	मेष	सिंह	कुंभ
षोडशांश	मेष	कर्क	मेष	कर्क	मेष	कर्क	सिंह	मीन	तुला	तुला
विंशांश	वृष	सिंह	तुला	वृश्चि	मेष	वृश्चि	कन्या	सिंह	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्विंशांश	सिंह	धनु	कर्क	कर्क	कर्क	मिथु	मक	वृष	वृष	वृष
सप्तविंशांश	कुंभ	मक	कन्या	धनु	कर्क	कन्या	कुंभ	मक	कुंभ	सिंह
त्रिंशांश	वृष	कन्या	मीन	तुला	वृष	वृश्चि	कन्या	मीन	धनु	धनु
खवेदांश	धनु	कर्क	कर्क	कर्क	तुला	धनु	सिंह	मीन	कर्क	कर्क
अक्षवेदांश	मिथु	मीन	कर्क	वृश्चि	मेष	वृश्चि	मीन	मेष	कन्या	कन्या
षष्ट्यंश	तुला	मीन	धनु	सिंह	कुंभ	वृश्चि	मेष	मक	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	5 कन्दुक
मंगल	0 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
गुरु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
शुक्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
शनि	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
राहु	0 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
केतु	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	9.85	7.90	11.75	13.75	10.65	13.25	10.75	8.75	12.65
सप्तवर्ग	11.10	7.75	12.75	12.50	11.40	11.90	10.50	9.63	12.88
दशवर्ग	11.13	7.68	13.88	13.50	13.35	12.45	13.25	11.85	13.80
षोडशवर्ग	10.55	8.42	13.68	13.50	12.40	12.05	13.58	11.50	13.78

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	सम	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	सम	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	29	56	30	25	8	34	52
सप्तवर्गज बल	71	75	90	71	94	75	62
ओजयुग्मक बल	0	30	30	0	0	30	0
केन्द्र बल	60	30	60	60	60	60	30
द्रेष्काण बल	15	0	0	0	0	0	15
कुल स्थान बल	175	191	210	156	162	199	159
कुल दिग्बल	34	17	12	0	9	25	44
नतोन्नत बल	36	24	24	60	36	36	24
पक्ष बल	17	86	17	17	43	43	17
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	0	30	0	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	9	2	6	57	12	4	58
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	61	112	93	240	150	83	159
कुल चेष्टाबल	0	0	27	2	9	1	20
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	0	-22	10	3	-24	0	16
कुल षट्बल	331	349	370	427	340	351	406
रूप षट्बल	5.5	5.8	6.2	7.1	5.7	5.8	6.8
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.1	1.0	1.2	1.0	0.9	1.1	1.4
संबंधित पद	3	6	2	5	7	4	1

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	17.40	48.83	28.85	7.41	8.47	6.19	32.00
कष्ट फल	39.12	8.62	31.07	45.09	51.51	39.39	17.77

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	349	349	331	427	351	370	406	406	406	340	370	351
भावदिग्बल	30	40	10	30	20	50	30	20	20	0	50	40
भावदृष्टि बल	50	103	74	56	54	13	3	-24	-6	45	54	37
कुल भाव बल	430	493	416	513	424	433	439	402	420	385	474	428
रूप भाव बल	7.2	8.2	6.9	8.6	7.1	7.2	7.3	6.7	7.0	6.4	7.9	7.1
संबंधित पद	6	2	10	1	8	5	4	11	9	12	3	7

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कर्क	01:47:22	--	--	पुनर्वसु	4	7
गुलिक	गु	वृष	13:04:51	--	--	रोहिणी	1	4
काल	का	मिथु	02:40:27	--	--	मृगशिरा	3	5
मृत्यु	मृ	मक	29:35:12	--	--	धनिष्ठा	2	23
यमघंटक	यम	मीन	24:13:41	--	--	रेवती	3	27
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कुंभ	26:40:55	--	--	पू०भाद्रपद	3	25
धूम	धू	वृष	20:48:55	--	--	रोहिणी	4	4
व्यतिपात	व्य	कुंभ	09:11:05	--	--	शतभिषा	1	24
परिवेश	परि	सिंह	09:11:05	--	--	मघा	3	10
इन्द्रचाप	इ	वृश्चि	20:48:55	--	--	ज्येष्ठा	2	18
उपकेतु	उप	धनु	07:28:55	--	--	मूल	3	19

प्राणपद	:	कर्क	18:48:59	कारकाँश लग्न	:	मिथु	23:54:24
भाव लग्न	:	धनु	05:21:22	होरा लग्न	:	वृष	08:55:22
घटी लग्न	:	कुंभ	25:18:56	वर्णद लग्न	:	सिंह	10:42:43

उपग्रह कुंडली

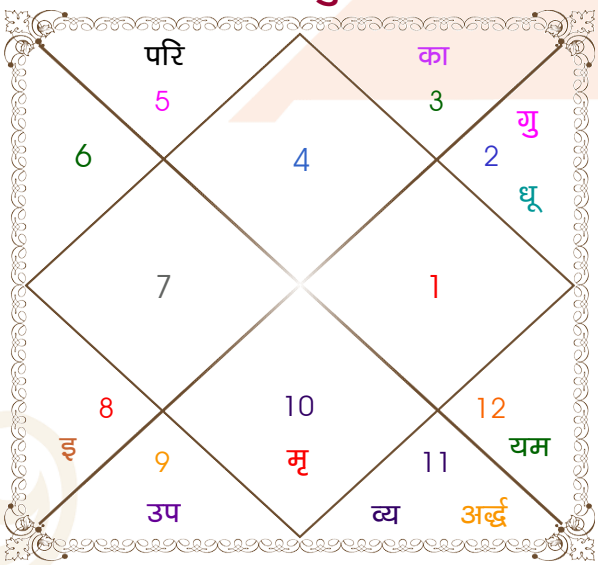

आरूढ़ कुंडली

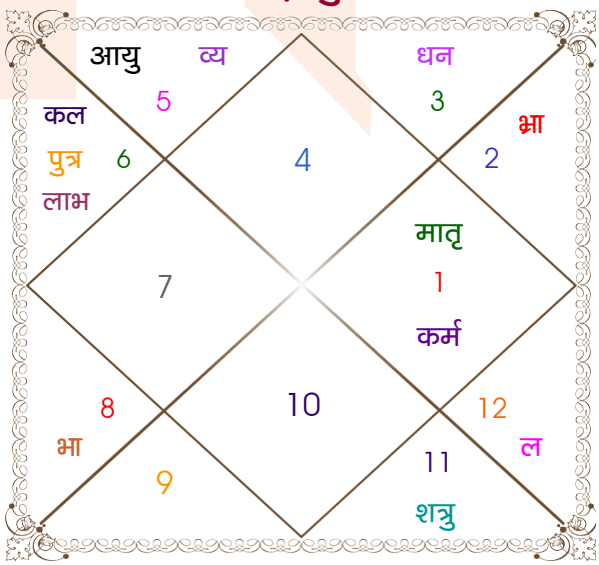

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
लग्न	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
कुल	2	3	2	3	5	6	5	3	5	5	5	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
कुल	4	1	6	4	3	5	6	2	4	3	6	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
कुल	4	6	3	1	1	3	2	5	5	4	3	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
कुल	3	4	3	3	6	6	3	6	4	4	6	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6
बुध	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
कुल	7	4	5	6	4	3	4	4	4	7	7	1	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	9
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	8
कुल	4	3	6	2	5	4	3	7	7	3	5	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
कुल	4	5	2	2	3	3	2	3	4	3	4	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
गुरु	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
मंगल	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
सूर्य	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
शुक्र	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	7
बुध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	4	4	5	4	3	4	5	4	7	3	3	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	2	3	4	3	4	4	4	5	2	2	3	39
गुरु	6	4	3	4	4	4	7	7	1	7	4	5	56
मंगल	2	5	5	4	3	2	4	6	3	1	1	3	39
सूर्य	3	5	6	5	3	5	5	5	4	2	3	2	48
शुक्र	2	5	4	3	7	7	3	5	3	4	3	6	52
बुध	3	6	6	3	6	4	4	6	6	3	4	3	54
चंद्र	5	4	1	6	4	3	5	6	2	4	3	6	49
बिन्दु	24	31	28	29	30	29	32	39	24	23	20	28	337
रेखा	32	25	28	27	26	27	24	17	32	33	36	28	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	1	0	2	2	1	2	0	0	0	9
गुरु	5	0	0	0	3	0	4	3	0	3	1	1	20
मंगल	0	4	4	1	1	1	3	3	1	0	0	0	18
सूर्य	0	3	3	3	0	3	2	3	1	0	0	0	18
शुक्र	0	1	1	0	5	3	0	2	1	0	0	3	16
बुध	0	3	2	0	3	1	0	3	3	0	0	0	15
चंद्र	3	1	0	0	2	0	4	0	0	1	2	0	13
रेखा	8	12	11	5	14	10	15	15	8	4	3	4	109

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	1	0	1	2	1	2	0	0	0	8
गुरु	2	0	0	0	3	0	4	3	0	3	0	1	16
मंगल	0	4	3	1	1	1	3	3	1	0	0	0	17
सूर्य	0	3	0	3	0	0	2	3	1	0	0	0	12
शुक्र	0	1	1	0	5	2	0	2	1	0	0	2	14
बुध	0	3	1	0	3	1	0	3	3	0	0	0	14
चंद्र	3	1	0	0	2	0	4	0	0	1	1	0	12
रेखा	5	12	6	5	14	5	15	15	8	4	1	3	93

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	89	95	137	124	123	127	57
ग्रह पिंड	46	64	59	30	128	15	21
शोध्य पिंड	135	159	196	154	251	142	78

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

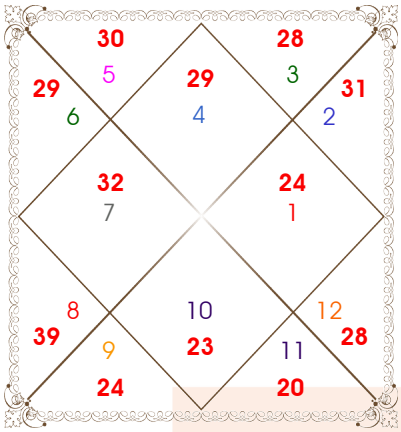

सूर्य का अष्टकवर्ग

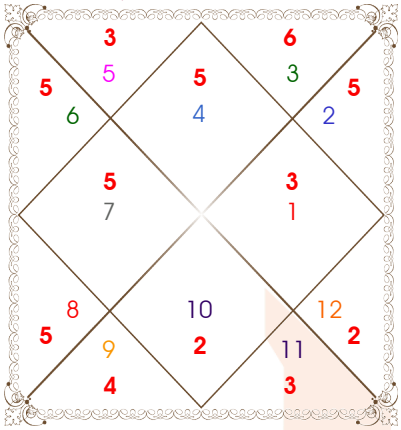

चंद्र का अष्टकवर्ग

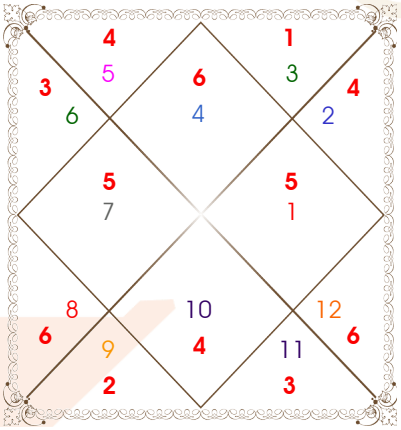

मंगल का अष्टकवर्ग

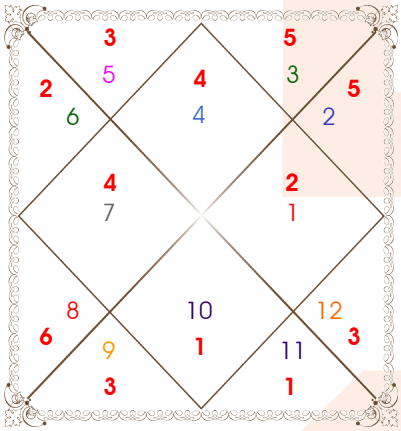

बुध का अष्टकवर्ग

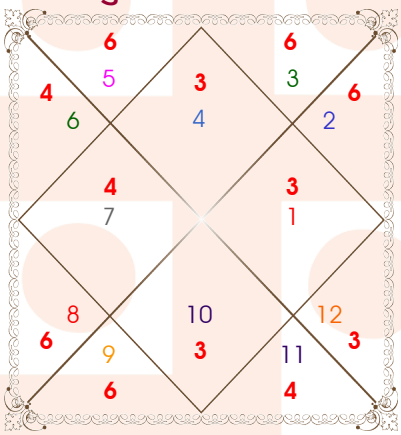

गुरू का अष्टकवर्ग

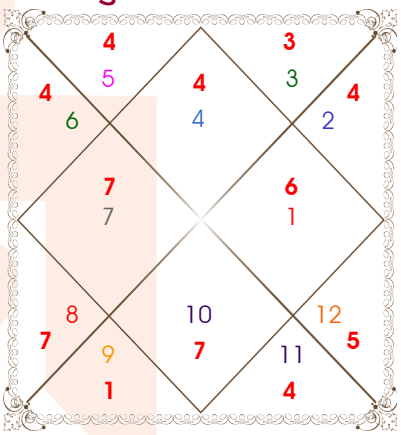

शुक्र का अष्टकवर्ग

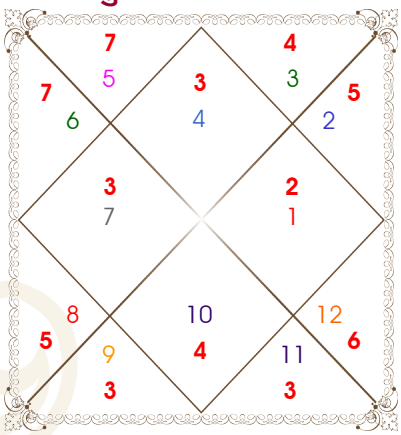

शनि का अष्टकवर्ग

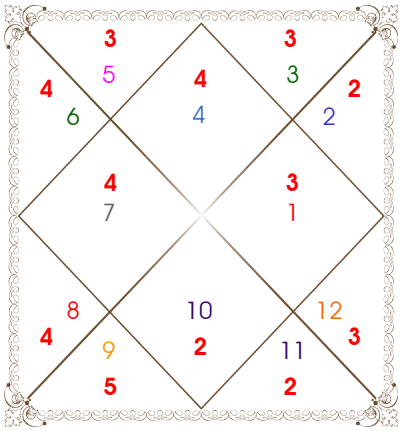

लग्न का अष्टकवर्ग

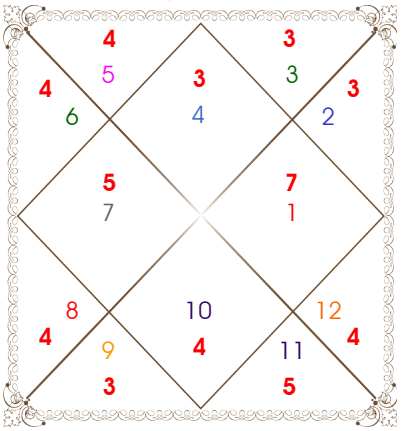

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 5 वर्ष 6 मास 6 दिन

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
21/01/1986		29/07/1991		29/07/1998		28/07/2016		28/07/2032	
29/07/1991		29/07/1998		28/07/2016		28/07/2032		29/07/2051	
	00/00/0000	मंगल	25/12/1991	राहु	10/04/2001	गुरु	16/09/2018	शनि	01/08/2035
	00/00/0000	राहु	12/01/1993	गुरु	04/09/2003	शनि	29/03/2021	बुध	10/04/2038
	00/00/0000	गुरु	19/12/1993	शनि	11/07/2006	बुध	05/07/2023	केतु	20/05/2039
	21/01/1986	शनि	28/01/1995	बुध	27/01/2009	केतु	10/06/2024	शुक्र	20/07/2042
शनि	29/05/1987	बुध	25/01/1996	केतु	15/02/2010	शुक्र	09/02/2027	सूर्य	02/07/2043
बुध	28/10/1988	केतु	22/06/1996	शुक्र	14/02/2013	सूर्य	28/11/2027	चंद्र	30/01/2045
केतु	29/05/1989	शुक्र	22/08/1997	सूर्य	09/01/2014	चंद्र	29/03/2029	मंगल	11/03/2046
शुक्र	28/01/1991	सूर्य	28/12/1997	चंद्र	11/07/2015	मंगल	05/03/2030	राहु	15/01/2049
सूर्य	29/07/1991	चंद्र	29/07/1998	मंगल	28/07/2016	राहु	28/07/2032	गुरु	29/07/2051

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
29/07/2051		28/07/2068		29/07/2075		29/07/2095		30/07/2101	
28/07/2068		29/07/2075		29/07/2095		30/07/2101		00/00/0000	
बुध	25/12/2053	केतु	25/12/2068	शुक्र	28/11/2078	सूर्य	16/11/2095	चंद्र	30/05/2102
केतु	22/12/2054	शुक्र	24/02/2070	सूर्य	28/11/2079	चंद्र	16/05/2096	मंगल	29/12/2102
शुक्र	22/10/2057	सूर्य	01/07/2070	चंद्र	29/07/2081	मंगल	21/09/2096	राहु	29/06/2104
सूर्य	28/08/2058	चंद्र	31/01/2071	मंगल	28/09/2082	राहु	16/08/2097	गुरु	29/10/2105
चंद्र	28/01/2060	मंगल	29/06/2071	राहु	28/09/2085	गुरु	04/06/2098	शनि	22/01/2106
मंगल	24/01/2061	राहु	16/07/2072	गुरु	29/05/2088	शनि	17/05/2099		00/00/0000
राहु	13/08/2063	गुरु	22/06/2073	शनि	29/07/2091	बुध	24/03/2100		00/00/0000
गुरु	18/11/2065	शनि	01/08/2074	बुध	29/05/2094	केतु	29/07/2100		00/00/0000
शनि	28/07/2068	बुध	29/07/2075	केतु	29/07/2095	शुक्र	30/07/2101		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 5 वर्ष 6 मा 0 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
21/01/1986		29/05/1987		28/10/1988		29/05/1989		28/01/1991	
29/05/1987		28/10/1988		29/05/1989		28/01/1991		29/07/1991	
शनि	28/01/1986	बुध	11/08/1987	केतु	09/11/1988	शुक्र	07/09/1989	सूर्य	06/02/1991
बुध	19/04/1986	केतु	10/09/1987	शुक्र	15/12/1988	सूर्य	08/10/1989	चंद्र	21/02/1991
केतु	23/05/1986	शुक्र	05/12/1987	सूर्य	25/12/1988	चंद्र	27/11/1989	मंगल	04/03/1991
शुक्र	28/08/1986	सूर्य	31/12/1987	चंद्र	12/01/1989	मंगल	02/01/1990	राहु	31/03/1991
सूर्य	25/09/1986	चंद्र	12/02/1988	मंगल	24/01/1989	राहु	03/04/1990	गुरु	24/04/1991
चंद्र	13/11/1986	मंगल	13/03/1988	राहु	25/02/1989	गुरु	23/06/1990	शनि	23/05/1991
मंगल	16/12/1986	राहु	30/05/1988	गुरु	26/03/1989	शनि	28/09/1990	बुध	18/06/1991
राहु	13/03/1987	गुरु	07/08/1988	शनि	29/04/1989	बुध	23/12/1990	केतु	29/06/1991
गुरु	29/05/1987	शनि	28/10/1988	बुध	29/05/1989	केतु	28/01/1991	शुक्र	29/07/1991

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
29/07/1991		25/12/1991		12/01/1993		19/12/1993		28/01/1995	
25/12/1991		12/01/1993		19/12/1993		28/01/1995		25/01/1996	
मंगल	07/08/1991	राहु	21/02/1992	गुरु	26/02/1993	शनि	21/02/1994	बुध	20/03/1995
राहु	29/08/1991	गुरु	12/04/1992	शनि	21/04/1993	बुध	19/04/1994	केतु	10/04/1995
गुरु	18/09/1991	शनि	12/06/1992	बुध	09/06/1993	केतु	13/05/1994	शुक्र	09/06/1995
शनि	12/10/1991	बुध	05/08/1992	केतु	28/06/1993	शुक्र	19/07/1994	सूर्य	27/06/1995
बुध	02/11/1991	केतु	27/08/1992	शुक्र	24/08/1993	सूर्य	08/08/1994	चंद्र	28/07/1995
केतु	11/11/1991	शुक्र	30/10/1992	सूर्य	10/09/1993	चंद्र	11/09/1994	मंगल	18/08/1995
शुक्र	05/12/1991	सूर्य	18/11/1992	चंद्र	09/10/1993	मंगल	05/10/1994	राहु	11/10/1995
सूर्य	13/12/1991	चंद्र	20/12/1992	मंगल	29/10/1993	राहु	05/12/1994	गुरु	28/11/1995
चंद्र	25/12/1991	मंगल	12/01/1993	राहु	19/12/1993	गुरु	28/01/1995	शनि	25/01/1996

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
25/01/1996		22/06/1996		22/08/1997		28/12/1997		29/07/1998	
22/06/1996		22/08/1997		28/12/1997		29/07/1998		10/04/2001	
केतु	02/02/1996	शुक्र	01/09/1996	सूर्य	28/08/1997	चंद्र	15/01/1998	राहु	24/12/1998
शुक्र	27/02/1996	सूर्य	22/09/1996	चंद्र	08/09/1997	मंगल	27/01/1998	गुरु	04/05/1999
सूर्य	06/03/1996	चंद्र	28/10/1996	मंगल	15/09/1997	राहु	28/02/1998	शनि	07/10/1999
चंद्र	18/03/1996	मंगल	22/11/1996	राहु	05/10/1997	गुरु	28/03/1998	बुध	24/02/2000
मंगल	27/03/1996	राहु	24/01/1997	गुरु	22/10/1997	शनि	01/05/1998	केतु	22/04/2000
राहु	18/04/1996	गुरु	22/03/1997	शनि	11/11/1997	बुध	31/05/1998	शुक्र	03/10/2000
गुरु	08/05/1996	शनि	29/05/1997	बुध	29/11/1997	केतु	13/06/1998	सूर्य	21/11/2000
शनि	01/06/1996	बुध	28/07/1997	केतु	07/12/1997	शुक्र	18/07/1998	चंद्र	12/02/2001
बुध	22/06/1996	केतु	22/08/1997	शुक्र	28/12/1997	सूर्य	29/07/1998	मंगल	10/04/2001

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
10/04/2001		04/09/2003		11/07/2006		27/01/2009		15/02/2010	
04/09/2003		11/07/2006		27/01/2009		15/02/2010		14/02/2013	
गुरु	05/08/2001	शनि	15/02/2004	बुध	20/11/2006	केतु	18/02/2009	शुक्र	16/08/2010
शनि	22/12/2001	बुध	12/07/2004	केतु	13/01/2007	शुक्र	23/04/2009	सूर्य	10/10/2010
बुध	25/04/2002	केतु	11/09/2004	शुक्र	17/06/2007	सूर्य	12/05/2009	चंद्र	09/01/2011
केतु	15/06/2002	शुक्र	03/03/2005	सूर्य	03/08/2007	चंद्र	13/06/2009	मंगल	14/03/2011
शुक्र	08/11/2002	सूर्य	24/04/2005	चंद्र	19/10/2007	मंगल	06/07/2009	राहु	26/08/2011
सूर्य	22/12/2002	चंद्र	20/07/2005	मंगल	13/12/2007	राहु	01/09/2009	गुरु	19/01/2012
चंद्र	05/03/2003	मंगल	19/09/2005	राहु	30/04/2008	गुरु	22/10/2009	शनि	10/07/2012
मंगल	25/04/2003	राहु	22/02/2006	गुरु	02/09/2008	शनि	22/12/2009	बुध	12/12/2012
राहु	04/09/2003	गुरु	11/07/2006	शनि	27/01/2009	बुध	15/02/2010	केतु	14/02/2013

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
14/02/2013		09/01/2014		11/07/2015		28/07/2016		16/09/2018	
09/01/2014		11/07/2015		28/07/2016		16/09/2018		29/03/2021	
सूर्य	03/03/2013	चंद्र	24/02/2014	मंगल	02/08/2015	गुरु	09/11/2016	शनि	09/02/2019
चंद्र	30/03/2013	मंगल	28/03/2014	राहु	29/09/2015	शनि	13/03/2017	बुध	20/06/2019
मंगल	18/04/2013	राहु	18/06/2014	गुरु	19/11/2015	बुध	01/07/2017	केतु	13/08/2019
राहु	07/06/2013	गुरु	30/08/2014	शनि	19/01/2016	केतु	15/08/2017	शुक्र	14/01/2020
गुरु	20/07/2013	शनि	25/11/2014	बुध	13/03/2016	शुक्र	23/12/2017	सूर्य	01/03/2020
शनि	10/09/2013	बुध	10/02/2015	केतु	04/04/2016	सूर्य	31/01/2018	चंद्र	17/05/2020
बुध	27/10/2013	केतु	14/03/2015	शुक्र	07/06/2016	चंद्र	06/04/2018	मंगल	10/07/2020
केतु	15/11/2013	शुक्र	13/06/2015	सूर्य	26/06/2016	मंगल	22/05/2018	राहु	26/11/2020
शुक्र	09/01/2014	सूर्य	11/07/2015	चंद्र	28/07/2016	राहु	16/09/2018	गुरु	29/03/2021

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
29/03/2021		05/07/2023		10/06/2024		09/02/2027		28/11/2027	
05/07/2023		10/06/2024		09/02/2027		28/11/2027		29/03/2029	
बुध	24/07/2021	केतु	25/07/2023	शुक्र	19/11/2024	सूर्य	23/02/2027	चंद्र	07/01/2028
केतु	10/09/2021	शुक्र	19/09/2023	सूर्य	07/01/2025	चंद्र	20/03/2027	मंगल	05/02/2028
शुक्र	26/01/2022	सूर्य	07/10/2023	चंद्र	29/03/2025	मंगल	06/04/2027	राहु	18/04/2028
सूर्य	09/03/2022	चंद्र	04/11/2023	मंगल	25/05/2025	राहु	20/05/2027	गुरु	22/06/2028
चंद्र	17/05/2022	मंगल	24/11/2023	राहु	18/10/2025	गुरु	27/06/2027	शनि	07/09/2028
मंगल	04/07/2022	राहु	14/01/2024	गुरु	25/02/2026	शनि	13/08/2027	बुध	15/11/2028
राहु	05/11/2022	गुरु	28/02/2024	शनि	29/07/2026	बुध	23/09/2027	केतु	13/12/2028
गुरु	24/02/2023	शनि	22/04/2024	बुध	14/12/2026	केतु	10/10/2027	शुक्र	05/03/2029
शनि	05/07/2023	बुध	10/06/2024	केतु	09/02/2027	शुक्र	28/11/2027	सूर्य	29/03/2029

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
29/03/2029		05/03/2030		28/07/2032		01/08/2035		10/04/2038	
05/03/2030		28/07/2032		01/08/2035		10/04/2038		20/05/2039	
मंगल	18/04/2029	राहु	14/07/2030	शनि	18/01/2033	बुध	18/12/2035	केतु	04/05/2038
राहु	08/06/2029	गुरु	08/11/2030	बुध	23/06/2033	केतु	14/02/2036	शुक्र	10/07/2038
गुरु	23/07/2029	शनि	27/03/2031	केतु	26/08/2033	शुक्र	27/07/2036	सूर्य	31/07/2038
शनि	15/09/2029	बुध	29/07/2031	शुक्र	25/02/2034	सूर्य	14/09/2036	चंद्र	02/09/2038
बुध	03/11/2029	केतु	18/09/2031	सूर्य	21/04/2034	चंद्र	05/12/2036	मंगल	26/09/2038
केतु	23/11/2029	शुक्र	11/02/2032	चंद्र	22/07/2034	मंगल	31/01/2037	राहु	26/11/2038
शुक्र	18/01/2030	सूर्य	26/03/2032	मंगल	24/09/2034	राहु	28/06/2037	गुरु	19/01/2039
सूर्य	04/02/2030	चंद्र	07/06/2032	राहु	08/03/2035	गुरु	06/11/2037	शनि	24/03/2039
चंद्र	05/03/2030	मंगल	28/07/2032	गुरु	01/08/2035	शनि	10/04/2038	बुध	20/05/2039

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
20/05/2039		20/07/2042		02/07/2043		30/01/2045		11/03/2046	
20/07/2042		02/07/2043		30/01/2045		11/03/2046		15/01/2049	
शुक्र	29/11/2039	सूर्य	06/08/2042	चंद्र	19/08/2043	मंगल	23/02/2045	राहु	14/08/2046
सूर्य	26/01/2040	चंद्र	04/09/2042	मंगल	22/09/2043	राहु	24/04/2045	गुरु	31/12/2046
चंद्र	01/05/2040	मंगल	24/09/2042	राहु	17/12/2043	गुरु	17/06/2045	शनि	14/06/2047
मंगल	08/07/2040	राहु	15/11/2042	गुरु	04/03/2044	शनि	20/08/2045	बुध	08/11/2047
राहु	28/12/2040	गुरु	01/01/2043	शनि	03/06/2044	बुध	17/10/2045	केतु	08/01/2048
गुरु	31/05/2041	शनि	25/02/2043	बुध	24/08/2044	केतु	09/11/2045	शुक्र	29/06/2048
शनि	30/11/2041	बुध	15/04/2043	केतु	27/09/2044	शुक्र	16/01/2046	सूर्य	20/08/2048
बुध	13/05/2042	केतु	05/05/2043	शुक्र	01/01/2045	सूर्य	05/02/2046	चंद्र	15/11/2048
केतु	20/07/2042	शुक्र	02/07/2043	सूर्य	30/01/2045	चंद्र	11/03/2046	मंगल	15/01/2049

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
15/01/2049		29/07/2051		25/12/2053		22/12/2054		22/10/2057	
29/07/2051		25/12/2053		22/12/2054		22/10/2057		28/08/2058	
गुरु	18/05/2049	बुध	01/12/2051	केतु	15/01/2054	शुक्र	12/06/2055	सूर्य	06/11/2057
शनि	12/10/2049	केतु	21/01/2052	शुक्र	16/03/2054	सूर्य	03/08/2055	चंद्र	02/12/2057
बुध	20/02/2050	शुक्र	16/06/2052	सूर्य	03/04/2054	चंद्र	28/10/2055	मंगल	20/12/2057
केतु	15/04/2050	सूर्य	30/07/2052	चंद्र	04/05/2054	मंगल	28/12/2055	राहु	05/02/2058
शुक्र	16/09/2050	चंद्र	11/10/2052	मंगल	25/05/2054	राहु	31/05/2056	गुरु	18/03/2058
सूर्य	01/11/2050	मंगल	01/12/2052	राहु	18/07/2054	गुरु	16/10/2056	शनि	06/05/2058
चंद्र	17/01/2051	राहु	12/04/2053	गुरु	04/09/2054	शनि	29/03/2057	बुध	19/06/2058
मंगल	12/03/2051	गुरु	07/08/2053	शनि	01/11/2054	बुध	22/08/2057	केतु	08/07/2058
राहु	29/07/2051	शनि	25/12/2053	बुध	22/12/2054	केतु	22/10/2057	शुक्र	28/08/2058

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
28/08/2058		28/01/2060		24/01/2061		13/08/2063		18/11/2065	
28/01/2060		24/01/2061		13/08/2063		18/11/2065		28/07/2068	
चंद्र	10/10/2058	मंगल	18/02/2060	राहु	13/06/2061	गुरु	02/12/2063	शनि	23/04/2066
मंगल	10/11/2058	राहु	12/04/2060	गुरु	15/10/2061	शनि	11/04/2064	बुध	09/09/2066
राहु	26/01/2059	गुरु	31/05/2060	शनि	11/03/2062	बुध	06/08/2064	केतु	06/11/2066
गुरु	05/04/2059	शनि	27/07/2060	बुध	21/07/2062	केतु	23/09/2064	शुक्र	18/04/2067
शनि	26/06/2059	बुध	16/09/2060	केतु	14/09/2062	शुक्र	08/02/2065	सूर्य	07/06/2067
बुध	07/09/2059	केतु	07/10/2060	शुक्र	16/02/2063	सूर्य	22/03/2065	चंद्र	27/08/2067
केतु	08/10/2059	शुक्र	07/12/2060	सूर्य	03/04/2063	चंद्र	30/05/2065	मंगल	24/10/2067
शुक्र	02/01/2060	सूर्य	25/12/2060	चंद्र	20/06/2063	मंगल	17/07/2065	राहु	19/03/2068
सूर्य	28/01/2060	चंद्र	24/01/2061	मंगल	13/08/2063	राहु	18/11/2065	गुरु	28/07/2068

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
28/07/2068		25/12/2068		24/02/2070		01/07/2070		31/01/2071	
25/12/2068		24/02/2070		01/07/2070		31/01/2071		29/06/2071	
केतु	06/08/2068	शुक्र	06/03/2069	सूर्य	02/03/2070	चंद्र	19/07/2070	मंगल	08/02/2071
शुक्र	31/08/2068	सूर्य	27/03/2069	चंद्र	13/03/2070	मंगल	01/08/2070	राहु	03/03/2071
सूर्य	07/09/2068	चंद्र	01/05/2069	मंगल	20/03/2070	राहु	02/09/2070	गुरु	23/03/2071
चंद्र	20/09/2068	मंगल	26/05/2069	राहु	08/04/2070	गुरु	30/09/2070	शनि	15/04/2071
मंगल	29/09/2068	राहु	29/07/2069	गुरु	25/04/2070	शनि	03/11/2070	बुध	06/05/2071
राहु	21/10/2068	गुरु	24/09/2069	शनि	16/05/2070	बुध	03/12/2070	केतु	15/05/2071
गुरु	10/11/2068	शनि	30/11/2069	बुध	03/06/2070	केतु	15/12/2070	शुक्र	09/06/2071
शनि	03/12/2068	बुध	30/01/2070	केतु	10/06/2070	शुक्र	20/01/2071	सूर्य	16/06/2071
बुध	25/12/2068	केतु	24/02/2070	शुक्र	01/07/2070	सूर्य	31/01/2071	चंद्र	29/06/2071

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
29/06/2071		16/07/2072		22/06/2073		01/08/2074		29/07/2075	
16/07/2072		22/06/2073		01/08/2074		29/07/2075		28/11/2078	
राहु	25/08/2071	गुरु	31/08/2072	शनि	25/08/2073	बुध	21/09/2074	शुक्र	17/02/2076
गुरु	15/10/2071	शनि	24/10/2072	बुध	22/10/2073	केतु	12/10/2074	सूर्य	18/04/2076
शनि	15/12/2071	बुध	11/12/2072	केतु	14/11/2073	शुक्र	12/12/2074	चंद्र	28/07/2076
बुध	07/02/2072	केतु	31/12/2072	शुक्र	21/01/2074	सूर्य	30/12/2074	मंगल	07/10/2076
केतु	01/03/2072	शुक्र	26/02/2073	सूर्य	10/02/2074	चंद्र	29/01/2075	राहु	08/04/2077
शुक्र	04/05/2072	सूर्य	15/03/2073	चंद्र	16/03/2074	मंगल	19/02/2075	गुरु	17/09/2077
सूर्य	23/05/2072	चंद्र	12/04/2073	मंगल	08/04/2074	राहु	14/04/2075	शनि	29/03/2078
चंद्र	24/06/2072	मंगल	02/05/2073	राहु	08/06/2074	गुरु	02/06/2075	बुध	18/09/2078
मंगल	16/07/2072	राहु	22/06/2073	गुरु	01/08/2074	शनि	29/07/2075	केतु	28/11/2078

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
28/11/2078		28/11/2079		29/07/2081		28/09/2082		28/09/2085	
28/11/2079		29/07/2081		28/09/2082		28/09/2085		29/05/2088	
सूर्य	16/12/2078	चंद्र	18/01/2080	मंगल	22/08/2081	राहु	11/03/2083	गुरु	04/02/2086
चंद्र	15/01/2079	मंगल	22/02/2080	राहु	25/10/2081	गुरु	04/08/2083	शनि	09/07/2086
मंगल	06/02/2079	राहु	23/05/2080	गुरु	21/12/2081	शनि	25/01/2084	बुध	24/11/2086
राहु	01/04/2079	गुरु	13/08/2080	शनि	27/02/2082	बुध	28/06/2084	केतु	19/01/2087
गुरु	20/05/2079	शनि	17/11/2080	बुध	28/04/2082	केतु	31/08/2084	शुक्र	01/07/2087
शनि	17/07/2079	बुध	11/02/2081	केतु	23/05/2082	शुक्र	01/03/2085	सूर्य	18/08/2087
बुध	07/09/2079	केतु	19/03/2081	शुक्र	02/08/2082	सूर्य	25/04/2085	चंद्र	08/11/2087
केतु	28/09/2079	शुक्र	28/06/2081	सूर्य	23/08/2082	चंद्र	26/07/2085	मंगल	03/01/2088
शुक्र	28/11/2079	सूर्य	29/07/2081	चंद्र	28/09/2082	मंगल	28/09/2085	राहु	29/05/2088

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
29/05/2088		29/07/2091		29/05/2094		29/07/2095		16/11/2095	
29/07/2091		29/05/2094		29/07/2095		16/11/2095		16/05/2096	
शनि	28/11/2088	बुध	23/12/2091	केतु	23/06/2094	सूर्य	04/08/2095	चंद्र	01/12/2095
बुध	10/05/2089	केतु	21/02/2092	शुक्र	02/09/2094	चंद्र	13/08/2095	मंगल	12/12/2095
केतु	17/07/2089	शुक्र	12/08/2092	सूर्य	23/09/2094	मंगल	19/08/2095	राहु	08/01/2096
शुक्र	26/01/2090	सूर्य	02/10/2092	चंद्र	29/10/2094	राहु	05/09/2095	गुरु	01/02/2096
सूर्य	25/03/2090	चंद्र	28/12/2092	मंगल	23/11/2094	गुरु	19/09/2095	शनि	01/03/2096
चंद्र	29/06/2090	मंगल	26/02/2093	राहु	25/01/2095	शनि	07/10/2095	बुध	27/03/2096
मंगल	04/09/2090	राहु	31/07/2093	गुरु	23/03/2095	बुध	22/10/2095	केतु	07/04/2096
राहु	25/02/2091	गुरु	16/12/2093	शनि	30/05/2095	केतु	28/10/2095	शुक्र	07/05/2096
गुरु	29/07/2091	शनि	29/05/2094	बुध	29/07/2095	शुक्र	16/11/2095	सूर्य	16/05/2096

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
16/05/2096		21/09/2096		16/08/2097		04/06/2098		17/05/2099	
21/09/2096		16/08/2097		04/06/2098		17/05/2099		24/03/2100	
मंगल	24/05/2096	राहु	09/11/2096	गुरु	24/09/2097	शनि	29/07/2098	बुध	30/06/2099
राहु	12/06/2096	गुरु	23/12/2096	शनि	09/11/2097	बुध	16/09/2098	केतु	18/07/2099
गुरु	29/06/2096	शनि	13/02/2097	बुध	21/12/2097	केतु	06/10/2098	शुक्र	08/09/2099
शनि	19/07/2096	बुध	01/04/2097	केतु	07/01/2098	शुक्र	03/12/2098	सूर्य	23/09/2099
बुध	06/08/2096	केतु	20/04/2097	शुक्र	24/02/2098	सूर्य	21/12/2098	चंद्र	19/10/2099
केतु	14/08/2096	शुक्र	14/06/2097	सूर्य	11/03/2098	चंद्र	19/01/2099	मंगल	06/11/2099
शुक्र	04/09/2096	सूर्य	30/06/2097	चंद्र	04/04/2098	मंगल	08/02/2099	राहु	23/12/2099
सूर्य	11/09/2096	चंद्र	28/07/2097	मंगल	21/04/2098	राहु	01/04/2099	गुरु	02/02/2100
चंद्र	21/09/2096	मंगल	16/08/2097	राहु	04/06/2098	गुरु	17/05/2099	शनि	24/03/2100

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - शुक्र - राहु		गुरु - शुक्र - गुरु		गुरु - शुक्र - शनि		गुरु - शुक्र - बुध	
25/05/2025 04:46		18/10/2025 07:10		25/02/2026 03:58		29/07/2026 09:10	
18/10/2025 07:10		25/02/2026 03:58		29/07/2026 09:10		14/12/2026 08:46	
राहु	16/06/2025 02:43	गुरु	04/11/2025 14:44	शनि	21/03/2026 13:59	बुध	17/08/2026 22:18
गुरु	05/07/2025 14:14	शनि	25/11/2025 04:14	बुध	12/04/2026 10:19	केतु	25/08/2026 23:29
शनि	28/07/2025 17:25	बुध	13/12/2025 13:46	केतु	21/04/2026 10:13	शुक्र	17/09/2026 23:25
बुध	18/08/2025 10:10	केतु	21/12/2025 03:35	शुक्र	17/05/2026 03:05	सूर्य	24/09/2026 21:00
केतु	26/08/2025 22:42	शुक्र	11/01/2026 19:03	सूर्य	24/05/2026 20:09	चंद्र	06/10/2026 08:58
शुक्र	20/09/2025 07:06	सूर्य	18/01/2026 06:54	चंद्र	06/06/2026 16:35	मंगल	14/10/2026 10:08
सूर्य	27/09/2025 14:25	चंद्र	29/01/2026 02:38	मंगल	15/06/2026 16:29	राहु	04/11/2026 02:53
चंद्र	09/10/2025 18:37	मंगल	05/02/2026 16:26	राहु	08/07/2026 19:40	गुरु	22/11/2026 12:25
मंगल	18/10/2025 07:10	राहु	25/02/2026 03:58	गुरु	29/07/2026 09:10	शनि	14/12/2026 08:46

गुरु - शुक्र - केतु		गुरु - सूर्य - सूर्य		गुरु - सूर्य - चंद्र		गुरु - सूर्य - मंगल	
14/12/2026 08:46		09/02/2027 04:22		23/02/2027 19:00		20/03/2027 03:24	
09/02/2027 04:22		23/02/2027 19:00		20/03/2027 03:24		06/04/2027 04:29	
केतु	17/12/2026 16:18	सूर्य	09/02/2027 21:53	चंद्र	25/02/2027 19:42	मंगल	21/03/2027 03:16
शुक्र	27/12/2026 03:34	चंद्र	11/02/2027 03:07	मंगल	27/02/2027 05:47	राहु	23/03/2027 16:37
सूर्य	29/12/2026 23:45	मंगल	11/02/2027 23:34	राहु	02/03/2027 21:27	गुरु	25/03/2027 23:10
चंद्र	03/01/2027 17:23	राहु	14/02/2027 04:10	गुरु	06/03/2027 03:22	शनि	28/03/2027 15:56
मंगल	07/01/2027 00:56	गुरु	16/02/2027 02:55	शनि	09/03/2027 23:54	बुध	31/03/2027 01:54
राहु	15/01/2027 13:28	शनि	18/02/2027 10:26	बुध	13/03/2027 10:41	केतु	01/04/2027 01:45
गुरु	23/01/2027 03:17	बुध	20/02/2027 12:06	केतु	14/03/2027 20:47	शुक्र	03/04/2027 21:56
शनि	01/02/2027 03:11	केतु	21/02/2027 08:34	शुक्र	18/03/2027 22:11	सूर्य	04/04/2027 18:23
बुध	09/02/2027 04:22	शुक्र	23/02/2027 19:00	सूर्य	20/03/2027 03:24	चंद्र	06/04/2027 04:29

गुरु - सूर्य - राहु		गुरु - सूर्य - गुरु		गुरु - सूर्य - शनि		गुरु - सूर्य - बुध	
06/04/2027 04:29		20/05/2027 00:24		27/06/2027 23:26		13/08/2027 05:48	
20/05/2027 00:24		27/06/2027 23:26		13/08/2027 05:48		23/09/2027 15:17	
राहु	12/04/2027 18:16	गुरु	25/05/2027 05:04	शनि	05/07/2027 07:15	बुध	19/08/2027 02:33
गुरु	18/04/2027 14:31	शनि	31/05/2027 09:07	बुध	11/07/2027 20:33	केतु	21/08/2027 12:30
शनि	25/04/2027 13:05	बुध	05/06/2027 21:35	केतु	14/07/2027 13:19	शुक्र	28/08/2027 10:04
बुध	01/05/2027 18:06	केतु	08/06/2027 04:08	शुक्र	22/07/2027 06:23	सूर्य	30/08/2027 11:45
केतु	04/05/2027 07:28	शुक्र	14/06/2027 15:58	सूर्य	24/07/2027 13:54	चंद्र	02/09/2027 22:32
शुक्र	11/05/2027 14:47	सूर्य	16/06/2027 14:43	चंद्र	28/07/2027 10:26	मंगल	05/09/2027 08:30
सूर्य	13/05/2027 19:23	चंद्र	19/06/2027 20:38	मंगल	31/07/2027 03:12	राहु	11/09/2027 13:31
चंद्र	17/05/2027 11:02	मंगल	22/06/2027 03:11	राहु	07/08/2027 01:45	गुरु	17/09/2027 01:59
मंगल	20/05/2027 00:24	राहु	27/06/2027 23:26	गुरु	13/08/2027 05:48	शनि	23/09/2027 15:17

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - सूर्य - केतु		गुरु - सूर्य - शुक्र		गुरु - चंद्र - चंद्र		गुरु - चंद्र - मंगल	
23/09/2027 15:17		10/10/2027 16:22		28/11/2027 09:10		07/01/2028 23:10	
10/10/2027 16:22		28/11/2027 09:10		07/01/2028 23:10		05/02/2028 08:58	
केतु	24/09/2027 15:09	शुक्र	18/10/2027 19:10	चंद्र	01/12/2027 18:20	मंगल	09/01/2028 14:56
शुक्र	27/09/2027 11:19	सूर्य	21/10/2027 05:36	मंगल	04/12/2027 03:09	राहु	13/01/2028 21:12
सूर्य	28/09/2027 07:47	चंद्र	25/10/2027 07:00	राहु	10/12/2027 05:15	गुरु	17/01/2028 16:06
चंद्र	29/09/2027 17:52	मंगल	28/10/2027 03:11	गुरु	15/12/2027 15:07	शनि	22/01/2028 04:04
मंगल	30/09/2027 17:44	राहु	04/11/2027 10:30	शनि	22/12/2027 01:20	बुध	26/01/2028 04:39
राहु	03/10/2027 07:05	गुरु	10/11/2027 22:20	बुध	27/12/2027 19:19	केतु	27/01/2028 20:25
गुरु	05/10/2027 13:38	शनि	18/11/2027 15:24	केतु	30/12/2027 04:08	शुक्र	01/02/2028 14:03
शनि	08/10/2027 06:24	बुध	25/11/2027 12:59	शुक्र	05/01/2028 22:28	सूर्य	03/02/2028 00:09
बुध	10/10/2027 16:22	केतु	28/11/2027 09:10	सूर्य	07/01/2028 23:10	चंद्र	05/02/2028 08:58

गुरु - चंद्र - राहु		गुरु - चंद्र - गुरु		गुरु - चंद्र - शनि		गुरु - चंद्र - बुध	
05/02/2028 08:58		18/04/2028 10:10		22/06/2028 08:34		07/09/2028 11:10	
18/04/2028 10:10		22/06/2028 08:34		07/09/2028 11:10		15/11/2028 10:58	
राहु	16/02/2028 07:56	गुरु	27/04/2028 01:57	शनि	04/07/2028 13:34	बुध	17/09/2028 05:44
गुरु	26/02/2028 01:42	शनि	07/05/2028 08:42	बुध	15/07/2028 11:44	केतु	21/09/2028 06:19
शनि	08/03/2028 15:17	बुध	16/05/2028 13:28	केतु	19/07/2028 23:41	शुक्र	02/10/2028 18:17
बुध	18/03/2028 23:40	केतु	20/05/2028 08:22	शुक्र	01/08/2028 20:07	सूर्य	06/10/2028 05:05
केतु	23/03/2028 05:56	शुक्र	31/05/2028 04:06	सूर्य	05/08/2028 16:39	चंद्र	11/10/2028 23:04
शुक्र	04/04/2028 10:08	सूर्य	03/06/2028 10:02	चंद्र	12/08/2028 02:52	मंगल	15/10/2028 23:39
सूर्य	08/04/2028 01:47	चंद्र	08/06/2028 19:54	मंगल	16/08/2028 14:49	राहु	26/10/2028 08:01
चंद्र	14/04/2028 03:53	मंगल	12/06/2028 14:48	राहु	28/08/2028 04:25	गुरु	04/11/2028 12:47
मंगल	18/04/2028 10:10	राहु	22/06/2028 08:34	गुरु	07/09/2028 11:10	शनि	15/11/2028 10:58

गुरु - चंद्र - केतु		गुरु - चंद्र - शुक्र		गुरु - चंद्र - सूर्य		गुरु - मंगल - मंगल	
15/11/2028 10:58		13/12/2028 20:46		05/03/2029 00:46		29/03/2029 09:10	
13/12/2028 20:46		05/03/2029 00:46		29/03/2029 09:10		18/04/2029 06:25	
केतु	17/11/2028 02:44	शुक्र	27/12/2028 09:26	सूर्य	06/03/2029 05:59	मंगल	30/03/2029 13:00
शुक्र	21/11/2028 20:22	सूर्य	31/12/2028 10:50	चंद्र	08/03/2029 06:41	राहु	02/04/2029 12:35
सूर्य	23/11/2028 06:27	चंद्र	07/01/2029 05:10	मंगल	09/03/2029 16:46	गुरु	05/04/2029 04:13
चंद्र	25/11/2028 15:16	मंगल	11/01/2029 22:48	राहु	13/03/2029 08:26	शनि	08/04/2029 07:47
मंगल	27/11/2028 07:03	राहु	24/01/2029 03:00	गुरु	16/03/2029 14:21	बुध	11/04/2029 03:24
राहु	01/12/2028 13:19	गुरु	03/02/2029 22:44	शनि	20/03/2029 10:53	केतु	12/04/2029 07:14
गुरु	05/12/2028 08:13	शनि	16/02/2029 19:10	बुध	23/03/2029 21:40	शुक्र	15/04/2029 14:47
शनि	09/12/2028 20:10	बुध	28/02/2029 07:08	केतु	25/03/2029 07:46	सूर्य	16/04/2029 14:39
बुध	13/12/2028 20:46	केतु	05/03/2029 00:46	शुक्र	29/03/2029 09:10	चंद्र	18/04/2029 06:25

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 3 वर्ष 10 मास 10 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
21/01/1986		02/12/1989		02/12/1997		02/12/1998		01/12/2000	
02/12/1989		02/12/1997		02/12/1998		01/12/2000		02/12/2003	
	00/00/0000	संक	12/09/1991	मंग	12/12/1997	पिंग	11/01/1999	धांय	03/03/2001
	00/00/0000	मंग	02/12/1991	पिंग	01/01/1998	धांय	13/03/1999	भ्राम	02/07/2001
	21/01/1986	पिंग	12/05/1992	धांय	01/02/1998	भ्राम	03/06/1999	भद्रि	02/12/2001
पिंग	02/06/1986	धांय	11/01/1993	भ्राम	13/03/1998	भद्रि	12/09/1999	उल्क	02/06/2002
धांय	01/01/1987	भ्राम	02/12/1993	भद्रि	03/05/1998	उल्क	12/01/2000	सिद्ध	01/01/2003
भ्राम	12/10/1987	भद्रि	11/01/1995	उल्क	03/07/1998	सिद्ध	02/06/2000	संक	02/09/2003
भद्रि	02/10/1988	उल्क	12/05/1996	सिद्ध	12/09/1998	संक	11/11/2000	मंग	02/10/2003
उल्क	02/12/1989	सिद्ध	02/12/1997	संक	02/12/1998	मंग	01/12/2000	पिंग	02/12/2003

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
02/12/2003		02/12/2007		01/12/2012		02/12/2018		02/12/2025	
02/12/2007		01/12/2012		02/12/2018		02/12/2025		02/12/2033	
भ्राम	12/05/2004	भद्रि	12/08/2008	उल्क	02/12/2013	सिद्ध	12/04/2020	संक	12/09/2027
भद्रि	01/12/2004	उल्क	12/06/2009	सिद्ध	01/02/2015	संक	01/11/2021	मंग	02/12/2027
उल्क	02/08/2005	सिद्ध	02/06/2010	संक	02/06/2016	मंग	11/01/2022	पिंग	12/05/2028
सिद्ध	13/05/2006	संक	13/07/2011	मंग	02/08/2016	पिंग	02/06/2022	धांय	11/01/2029
संक	03/04/2007	मंग	02/09/2011	पिंग	01/12/2016	धांय	01/01/2023	भ्राम	02/12/2029
मंग	13/05/2007	पिंग	12/12/2011	धांय	02/06/2017	भ्राम	12/10/2023	भद्रि	11/01/2031
पिंग	02/08/2007	धांय	12/05/2012	भ्राम	01/02/2018	भद्रि	02/10/2024	उल्क	12/05/2032
धांय	02/12/2007	भ्राम	01/12/2012	भद्रि	02/12/2018	उल्क	02/12/2025	सिद्ध	02/12/2033

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
02/12/2033		02/12/2034		01/12/2036		02/12/2039		02/12/2043	
02/12/2034		01/12/2036		02/12/2039		02/12/2043		01/12/2048	
मंग	12/12/2033	पिंग	11/01/2035	धांय	03/03/2037	भ्राम	12/05/2040	भद्रि	12/08/2044
पिंग	01/01/2034	धांय	13/03/2035	भ्राम	02/07/2037	भद्रि	01/12/2040	उल्क	12/06/2045
धांय	01/02/2034	भ्राम	03/06/2035	भद्रि	02/12/2037	उल्क	02/08/2041	सिद्ध	02/06/2046
भ्राम	13/03/2034	भद्रि	12/09/2035	उल्क	02/06/2038	सिद्ध	13/05/2042	संक	13/07/2047
भद्रि	03/05/2034	उल्क	12/01/2036	सिद्ध	01/01/2039	संक	03/04/2043	मंग	02/09/2047
उल्क	03/07/2034	सिद्ध	02/06/2036	संक	02/09/2039	मंग	13/05/2043	पिंग	12/12/2047
सिद्ध	12/09/2034	संक	11/11/2036	मंग	02/10/2039	पिंग	02/08/2043	धांय	12/05/2048
संक	02/12/2034	मंग	01/12/2036	पिंग	02/12/2039	धांय	02/12/2043	भ्राम	01/12/2048

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
01/12/2048		02/12/2054		02/12/2061		02/12/2069		02/12/2070	
02/12/2054		02/12/2061		02/12/2069		02/12/2070		01/12/2072	
उल्क	02/12/2049	सिद्ध	12/04/2056	संक	12/09/2063	मंग	12/12/2069	पिंग	11/01/2071
सिद्ध	01/02/2051	संक	01/11/2057	मंग	02/12/2063	पिंग	01/01/2070	धांय	13/03/2071
संक	02/06/2052	मंग	11/01/2058	पिंग	12/05/2064	धांय	01/02/2070	भ्राम	03/06/2071
मंग	02/08/2052	पिंग	02/06/2058	धांय	11/01/2065	भ्राम	13/03/2070	भद्रि	12/09/2071
पिंग	01/12/2052	धांय	01/01/2059	भ्राम	02/12/2065	भद्रि	03/05/2070	उल्क	12/01/2072
धांय	02/06/2053	भ्राम	12/10/2059	भद्रि	11/01/2067	उल्क	03/07/2070	सिद्ध	02/06/2072
भ्राम	01/02/2054	भद्रि	02/10/2060	उल्क	12/05/2068	सिद्ध	12/09/2070	संक	11/11/2072
भद्रि	02/12/2054	उल्क	02/12/2061	सिद्ध	02/12/2069	संक	02/12/2070	मंग	01/12/2072

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
01/12/2072		02/12/2075		02/12/2079		01/12/2084		02/12/2090	
02/12/2075		02/12/2079		01/12/2084		02/12/2090		00/00/0000	
धांय	03/03/2073	भ्राम	12/05/2076	भद्रि	12/08/2080	उल्क	02/12/2085	सिद्ध	12/04/2092
भ्राम	02/07/2073	भद्रि	01/12/2076	उल्क	12/06/2081	सिद्ध	01/02/2087	संक	01/11/2093
भद्रि	02/12/2073	उल्क	02/08/2077	सिद्ध	02/06/2082	संक	02/06/2088	मंग	11/01/2094
उल्क	02/06/2074	सिद्ध	13/05/2078	संक	13/07/2083	मंग	02/08/2088	पिंग	21/01/2094
सिद्ध	01/01/2075	संक	03/04/2079	मंग	02/09/2083	पिंग	01/12/2088		00/00/0000
संक	02/09/2075	मंग	13/05/2079	पिंग	12/12/2083	धांय	02/06/2089		00/00/0000
मंग	02/10/2075	पिंग	02/08/2079	धांय	12/05/2084	भ्राम	01/02/2090		00/00/0000
पिंग	02/12/2075	धांय	02/12/2079	भ्राम	01/12/2084	भद्रि	02/12/2090		00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	1
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 1
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	सुख, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	93%	धनार्जन, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	67%	व्यावसायिक उन्नति, सुख
लहसुनिया	केतु	64%	सुख, दम्पति
पुखराज	गुरु	62%	दम्पति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	61%	दम्पति, धनार्जन, सुख
माणिक्य	सूर्य	56%	दम्पति, धन
पन्ना	बुध	6%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	सन्तति कष्ट, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना

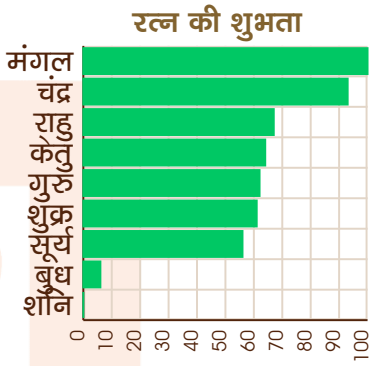

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	29/07/1991	62%	100%	100%	19%	62%	61%	0%	55%	52%
मंगल	29/07/1998	62%	99%	100%	0%	69%	61%	0%	55%	70%
राहु	28/07/2016	38%	80%	91%	6%	62%	67%	9%	80%	52%
गुरु	28/07/2032	62%	99%	100%	0%	75%	47%	0%	67%	64%
शनि	29/07/2051	38%	80%	91%	19%	62%	67%	22%	73%	52%
बुध	28/07/2068	62%	80%	100%	31%	62%	67%	0%	67%	64%
केतु	29/07/2075	38%	80%	100%	6%	62%	67%	0%	55%	77%
शुक्र	29/07/2095	38%	80%	100%	19%	62%	73%	9%	73%	70%
सूर्य	30/07/2101	69%	99%	100%	6%	69%	47%	0%	55%	52%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मूंगा व मोती रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मूंगा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, लहसुनिया, पुखराज, हीरा एवं माणिक्य रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना व नीलम रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने से आपको भूमि-भवन सुख की प्राप्ति होगी। मंगल की यह स्थिति मंगलिक योग बनाती है। मूंगा रत्न शुभ होकर संतान सुख एवं जन्म स्थान से दूर रखेगा। साहस और जोश से किये गये सभी कार्यों में आपको सफलता की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न आपकी मातृ श्रद्धा को बढ़ायेगा। इस भाव से मंगल सप्तम, दशम एवं एकादश भाव को देख रहे है। रत्न का प्रभाव इन भावों की शुभता में वृद्धि व अशुभता को कम करेगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में मंगल पंचम भाव एवं दशम भाव के स्वामी तथा मंगल लग्नेश चंद्र के मित्र भी है। यह मंगल योगकारक ग्रह होने के कारण आपके लिए सबसे अधिक शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए अतिउत्तम रत्न है। संतान सुख और शैक्षिक जीवन में अनुकूल सफलता पाने के लिए आपको यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको संतान प्राप्ति के योग, पिता एवं आजीविका क्षेत्र से लाभ दिला सकता है। रत्न की शुभता से आपको भूमि, भवन, दैनिक व्यवसाय, परिश्रम से सम्मान प्राप्ति हो सकती है। मंगल रत्न मूंगा आपके ग्रहस्थ जीवन को भी सुखमय बनाए रख सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न की शुभता से आपको विदेश जाना पसंद होगा। आपको महंगे वाहनों का सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। रत्न शुभता से समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। मोती रत्न के प्रभाव से आपको सरकारी मामलों की विधिवत जानकारी होगी। मोती रत्न आपको सरकार की ओर से सम्मान और पद प्रतिष्ठा दे सकता है। रत्न शुभता से आप मिलनसार बनेंगे। व्यापार के माध्यम से आपको मनोकूल लाभ होगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में चंद्र लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश चंद्र का रत्न

मोती धारण कर आप अपने जीवन को दीर्घकालिन बना सकते है। मोती रत्न आपके स्वास्थ्य को अनुकूल, तेज एवं स्फूर्ति दे सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप को प्रयासों में सफलता, यश-सम्मान एवं भावुकता में कमी कर सकता है। रत्न शुभता से आप व्यवहारिक बनेंगे तथा आपका मनोबल उच्च रहेगा। मोती रत्न आपको यशस्वी बनाकर व्यवसाय में सफलता दे सकता है। इसके साथ ही रत्न की शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखी रख सकती है। आपके स्वभाव की अस्थिरता को नियंत्रित करने में भी मोती रत्न अहम भूमिका निभा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। अतः आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। गोमेद रत्न आपको बलवान और निडर बनाएगा। गोमेद की शुभता से आप बुद्धिमान, परोपकारी, सफल, सम्मानित, कीर्तिमान और श्रेष्ठ बनेंगे। रत्न शुभता से आप कार्यक्षेत्र में अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। रत्न शुभता आपको व्यापारिक निपुणता और यात्राओं से लाभ देगी। गोमेद रत्न की अनुकूलता आपको अदालती कामों में विजय देगी। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपके कामों में नियमितता आयेगी।

राहु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपकी मानसिक परेशानियों में कमी होगी। यह रत्न आपको सुख शांति, पारिवारिक सौहार्द और भूमि-भवन के विषयों में लाभ देगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको सरकार व सगे संबंधियों से सुख-सहयोग की स्थिति बनाए रखेगा। तथा यह रत्न आपको परदेश का सुख देगा तथा आपके मातृ सुख में वृद्धि करेगा। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने से आपको भौतिक सुख-सुविधाओं का सुख भोगने के प्रर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे। यह रत्न आपकी संतोष भावना को बढ़ाएगा। आपको सेवकों का सुख प्राप्त होगा। शैक्षिक पक्ष से भी इस रत्न की शुभता आपके साथ बनी हुई है।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान

करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया या इसके उपरत्न धारण करने चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको धन-धान्य से समृद्ध करेगा। आप अपने दायित्वों का निर्वाह कुशलता के साथ करेंगे। आपका उत्साह भाव देखते ही बनेगा। माता सुख में कुछ कमी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप चंचल स्वभाव के हो सकते है। देश विदेश से धनार्जन योगा। पैतृक धन में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। घर भूमि भवन के विषयों से सुख की प्राप्ति होगी। लहसुनिया रत्न धारण से केतु ग्रह की शुभता बढ़ती है और अशुभता कम होती है।

केतु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज शुभ रत्न धारण कर आप गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते है। पुखराज रत्न धारण करने के बाद लोग आपसे मिलकर प्रसन्न होंगे। रत्न की शुभता से आप मिलनसार व्यक्ति बनेंगे। आपका जीवनसाथी आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा। यह रत्न आपको काव्य साहित्य, कला प्रेमी और शास्त्र प्रेमी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आपको धन, सुख, श्रेष्ठ पद और मान्यता मिलेगी। पुखराज रत्न से आपको सरकारी कामों, कचहरी के काम, मंत्रणा देने का काम, सलाहकार का काम, चित्रकला आदि के द्वारा लाभ मिल सकते है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में गुरु षष्ठ भाव एवं नवम भाव के स्वामी है। गुरु लग्नेश चंद्र के मित्र एवं त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए शुभ ग्रह होते है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण कर आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन सकता है। आप विद्या, बुद्धि व संतान से युक्त हो सकते है। आपके कार्यो में जो बाधाएं आती है वो रत्न शुभता से दूर हो सकती है। छठे भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न रोग, शत्रु तथा ऋणों पर नियन्त्रण बनाये रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। शत्रुओं पर विजय, भाग्य व धर्म को प्रबलता मिल सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण कर आप श्रेष्ठ व्यक्तियों से स्नेह करने वाले भाग्यवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप चंचल, विलासी और संगीत को पसंद करने वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप एक श्रेष्ठ कलाकार हो सकते हैं। गायन और अभिनय में आपकी रुचि जागृत करने में भी हीरा रत्न लाभदायक साबित हो सकता है। हीरा रत्न वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में उपयोगी रहेगा। रत्न शुभता से आपको विदेश यात्राओं अथवा दूर की यात्राओं के अवसर प्राप्त हो सकते है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं आयेश है। शुक्र ग्रह की शुभता

प्राप्त करने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। हीरे की शुभता आपको घर, जमीन-जायदाद, वाहन, प्रतिष्ठा और माता के सुख प्राप्त हो सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। आय, उन्नति, सफलता के अतिरिक्त यह रत्न आपको बडी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी, दोस्त एवं उत्तम शुभ चिन्तक दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आपके स्वाभिमान भाव में वृद्धि होगी। आपकी कठोरता में कमी होगी। माणिक्य रत्न आपको स्वतन्त्र कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है। सूर्य रत्न धारण करने से आपके वैवाहिक जीवन में सामंजस्य स्थापित होगा। लाभ और उन्नति प्राप्त करने के लिए आपको अपनी अनुशासन योग्यता में कमी करनी होगी। यह रत्न स्वतंत्र व्यापार में अधिकार क्षमता बढ़ायेगा। माणिक्य रत्न की शुभता आपमें निस्वार्थ भावना का विकास करेगी।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव के स्वामी है। सूर्य लग्नेश चंद्र का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। सूर्य रत्न की शुभता से आपको धन व कुटुम्ब एवं मान-सम्मान प्राप्त करा सकता है। माणिक्य के प्रभाव से आयु व दैनिक जीवन में सुख-शांति प्राप्त की जा सकती है। यह रत्न बातचीत में राजसिक प्रभाव, वाणी में आत्मविश्वास भाव दे सकता है। तथा यह रत्न आपको बैंक, रेवेन्यी, अकाउन्ट, सात्विक भोजन, कीमती धातु जैसे विषयों में शुभता दे सकता है। माणिक्य रत्न को धारण पर आप छोटे भाई- बहनों की विदेश यात्रा, कर्जा चुकाना, जेल, सजा, माता को होने वाले लाभ, मामा की यात्राएं, उच्च शिक्षा, दुर्घटना, ऋण इत्यादि में शुभता प्राप्त कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल

वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आप व्यर्थ के वादि-विवाद या लड़ाई झगड़ों में पड़ सकते है। यह रत्न व्यावसायिक साझेदार पर आपका विश्वास कम कर सकता है। आपके व्यवहार में शिष्टता का अभाव आ सकता है। पन्ना रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक व्यवहारिक हो सकते है। जिसके कारण आपमें संवेदना, दया और सहानुभूति जैसे गुणों की कमी हो सकती है। लेखन, क्रयि-विक्रय और व्यापारिक कुशलता प्राप्ति के लिए रत्न की अनुकूलता नहीं बनी हुई है। बुध रत्न पन्ना से आपके जीवन साथी का स्वभाव अव्यवहारिक हो सकता है। यह रत्न आपको आर्थिक पक्ष से भी कमजोर कर रहा है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में बुध तीसरे भाव एवं द्वादश भाव के स्वामी है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको बंधु बांधवों का सुख कम प्राप्त हो सकता है। पराक्रम भाव के पक्ष से भी यह रत्न आपके लिए अनुकूल फलदायक नहीं रहेगा। भाई-बहनों से संबंधों की मधुरता में कमी हो सकती है। बौद्धिक बल से धनार्जन करने में पन्ना रत्न आपको सहयोग नहीं करेगा। व्यावसायिक यात्राओं में असफलता का सामना आपको करना पड़ सकता है। पन्ना रत्न आपके भाग्योदय में बाधक का कार्य कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यय व्यर्थ हो सकते है। व्ययों को नियंत्रित रखने में आपको कष्ट हो सकते है। विद्या और बौद्धिक विषयों में आपके साथ परेशानियां बनी रहेंगी।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप अपने दायित्वों का निर्वाह पूर्ण रूप से नहीं कर पायेंगे. यह रत्न शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। मेहनत और कर्मठता की कमी आपमें आलस्य भाव ला सकती है। यह रत्न शैक्षिक क्षेत्र में आपकी एकाग्रता भंग कर सकता है। शैक्षिक प्रतियोगियों में सफल होना आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। आप देवी-देवताओं और धर्म से विमुख हो सकते है। रत्न प्रभाव आपकी प्रसिद्धि को प्रभावित करेगा जिसके कारण आपकी प्रसिद्धि धीरे धीरे कम हो सकती है। धन-संपति की हानि के योग भी बन सकते है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शनि सप्तमेश एवं अष्टमेश है। शनि का रत्न नीलम धारण करना आपके लिए सुख फलदायक नहीं रहेगा। नीलम रत्न आपके भाग्योदय में

रुकावट ला सकता है। संतान, जीवन साथी व माता के कष्ट रत्न प्रभाव से बढ़ सकते है। यह रत्न आपको पेशाब से संबंधित रोग दे सकता है। शत्रु आपको शारीरिक कष्ट दे सकते है। रत्न प्रभाव से आपका मन चंचल रहेगा। मित्रों से मित्रताएं बनती बिगड़ती रहेंगी। यह रत्न आपकी आयु में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य कमजोर होगा। गुप्त रोग भी रत्न प्रभाव से प्रभावी हो सकते है। यह रत्न आपकी शारीरिक अस्वस्थता को बढ़ाएगा। कलह और अपयश की स्थिति आपके लिए यह रत्न बना सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु
(28/07/2016 - 28/07/2032)

गुरु की दशा में आपका मूंगा, मोती व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, लहसुनिया व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(28/07/2032 - 29/07/2051)

शनि की दशा में आपका मूंगा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, हीरा, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और नीलम व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(29/07/2051 - 28/07/2068)

बुध की दशा में आपका मूंगा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद, लहसुनिया, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण

करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(28/07/2068 - 29/07/2075)

केतु की दशा में आपका मूंगा, मोती व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(29/07/2075 - 29/07/2095)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद, लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(29/07/2095 - 30/07/2101)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पुखराज, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मोती

आपका जन्म कर्क राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी चंद्रमा होता है। चंद्रमा सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कर्क राशि के लग्न वाले जातकों को कर्क राशि के स्वामी ग्रह चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मोती रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मोती रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मोती रत्न चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मोती को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

मोती को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ऊँ सों सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही, सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मोती रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मोती रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

कर्क लग्न वाले जातक यदि मोती रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कर्क लग्न की हैं। कर्क लग्न आपको संवेदनशील बना रहा है। चर लग्न आपको लगातार कार्य करने का स्वभाव दे रहा हैं। आपको जलीय स्थानों के नजदीकरहना अधिक प्रिय हो सकता हैं। लगातार कार्य करना आपका स्वभाव , बिना थके निरन्तर कार्य करना आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है। आप भावुक, धैर्यवान है,और कठिन से कठिन समय में भी घबराते नहीं हैं। कुछ विषयों पर आप जिद्धी भी हो जाते हैं। अपने स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को छोड़ने का प्रयास आपको करना चाहिए। साथ ही आपको अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करना चाहिए। कार्य के घण्टो में से थोड़ा समय आराम के लिए भी निकालें। आप अत्यधिक भावनात्मक हैं इसलिए आपके निर्णय कई बार गलत भी हो जाते हैं।

फिर भी आप जब किसी काम को करने की ठान लेते है, तो उसे करके ही बैठते हैं।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। तथा इन भावों के स्वामियों को त्रिक भावेश के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भाव, भावेश व इन भावों में बैठे ग्रह स्वयं में किसीन किसी प्रकार की अशुभता लिये होते हैं। यहीं कारण है की ये सभी आपके जीवन में कष्ट और बाधाओं का कारण बन सकते है। जिसमें छठा भाव रोग, ऋण और शत्रुओं सेकष्ट देता है, इसका स्वामी जिस भाव में जाता है, उसके शुभ फलों में कुछ न कुछ कमी अवश्य करता हैं। जिसके फलस्वरूप आपको षष्ट भाव के स्वामी या इस भाव में स्थितग्रहों की महादशा-अन्तर्दशाओं में भाव सम्बंधित रोग, ऋण या शत्रुओं के द्वारा शारीरिक या मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं।

6, 8 व 12 भावों में अष्टम भाव विशेष अशुभता लिए होते हैं। इस भाव का स्वामी अष्टमेश, जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता हैं। अष्टम भाव अशुभता, बाधा और पाप का भाव हैं। और इस भाव या इस भाव के स्वामी से किसी भी भावेश का सम्बन्ध होना, भावेश की शुभता में कमी कर अशुभता को बढाता है। तीसरा और अंतिम त्रिक भाव, द्वादश भाव है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता हैं। द्वादश भाव से हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष का विचार किया जाता हैं। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव के विषयों में अशुभता लाते हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न में षष्ठ भाव व नवम भाव के स्वामी गुरु हैं। षष्टेश गुरु आपका मामा-मौसी से बैर करा सकता हैं। संतान सुख में कमी कर सकता है तथा संतान रोगों के प्रभाव में शीघ्र आ सकती हैं, बुद्धि और विवेक का समय पर उपयोग नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त ऋण आदि विषयों में शत्रु बाधक हो सकते हैं।

सप्तम व अष्ठम भाव के शनि की यह स्थिति जीवन साथी से प्राप्त होने वाले सुखों में कमी, सरकारी क्षेत्रों व आजीविका क्षेत्रों से अल्प लाभ, धन संचय कठिन, कुटुंबका न्यून सुख, विद्या बुद्धि से अल्प लाभ व संतान सुख में बाधक बनता हैं।

द्वादश व तृतीय भाव के स्वामी बुध हैं। बुध आपके लग्न के लिए अशुभ ग्रहों की श्रेणी में आते हैं। बुध की यह स्थिति आपको अधिक व्ययों से परेशान, पारिवारिक सुख में न्यूनता, धन संचय दुष्कर, शत्रु संघर्ष से हानि के योग बना सकता हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण

कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	कम खर्च
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	धन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी लेकिन शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी। स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। मांगलिक दोष के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते है लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपके पति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पति के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा ।

अतः मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के

मार्ग पर अग्रसर होंगी तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी। दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 21 हैं। दो एवं एक के योग से आपका मूलांक 3 होता है। मूलांक तीन का अधिपति गुरु ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा एक का सूर्य है। अतः आपके जीवन में गुरु, चन्द्र तथा सूर्य ग्रह का शुभ-अशुभ प्रभाव रहेगा। मूलांक स्वामी गुरु के प्रभाव से आप एक विदुषी महिला कहलायेंगी। विद्या के क्षेत्र में आपकी उन्नति होगी। धर्म-कर्म के कार्यों में रुचि रखेंगी। अधिक आयु पर आप आध्यात्म के क्षेत्र में चली जायेंगी। आप एक अनुशासन प्रिय महिला होंगी एवं अपने अधीनस्थों से अपेक्षा रखेंगी कि वह भी अनुशासन में रहें । आप काम में शिथिलता या देरी पसन्द नहीं करेंगी। इससे आपके मातहत आपके विरोधी होंगे।

सूर्य के प्रभाव से आप एक दृढ़ प्रतिज्ञ महिला होंगी। स्वभाव में हठीपन भी रहेगा एवं आप अपने कार्यक्षेत्र में सूर्य के समान ही चमकेंगी। लेकिन चन्द्र प्रभाव से कभी कभी अंधेरे का सामना करना पड़ेगा। इससे आपके मन में निराशा के भाव आयेंगे। आपका जीवन सन्तुलित रहेगा एवं ऐसे कार्यों में आपका मन लगेगा जहाँ कार्य ईमानदारी से होता हो। आप स्वयं अपनी मेहनत तथा सच्चाई पर भरोसा करेंगी और इसी के सहारे सफलताएं अर्जित करेंगी।

आपकी ऐसे कार्यों में रुचि रहेगी जहाँ बुद्धिजन्य कार्य होता हो। लेखन, पठन-पाठन, भाषण, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में कार्य करने पर आपको अच्छी सफलताएं प्राप्त होंगी। सूर्य, चन्द्र, गुरु के संयुक्त प्रभाव से आप अपने जीवन में उच्चता को अवश्य प्राप्त करेंगी एवं आपकी अन्तिम अवस्था काफी खुशमय रहेगी।

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाली स्पष्ट वक्ता होंगी। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाली यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाली शूरवीर महिला के रूप में पहचान स्थापित करेंगी। आपका जीवन चक्र एक मुखिया की भाँति संचालित होगा अर्थात आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचारधारा पर निर्भीक चलेंगी। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट-कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगी। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगी। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगी, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

आपका मूलांक 3 है तथा भाग्यांक 1 है। मूलांक 3 का स्वामी गुरु है तथा भाग्यांक 1 का स्वामी सूर्य है। मूलांक 3 तथा भाग्यांक 1 के बीच सम संबंध हैं। इसके प्रभाववश आपके

अंदर सूर्य एवं गुरु का प्रभाव उच्च कोटि का होगा। आप रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में अत्यधिक सफल महिला सिद्ध होंगी। आप ऐसा रोजगार पसंद करेंगी, जिसमें आपकी हुकूमत बनी रहे, अर्थात स्वतंत्र रूप से आप कार्य करना अधिक पसंद करेंगी। आपके रोजगार का क्षेत्र ऐसा रहेगा जिसमें दूसरों का भला और सामाजिक सुधार होता हो। आप स्वतंत्र रूप से रोजगार के क्षेत्र में अपने निर्णय लेंगी एवं निर्भीक चलते हुए नाम तथा धन प्राप्त करेंगी। अध्ययन-अध्यापन जैसे कार्य आपको विशेष पसंद आएंगे। जिस कार्य में मुखिया का पद प्राप्त हो, ऐसी आपकी महत्वाकांक्षा रहेगी। रोजगार में आप सच्चाई के मार्ग पर चलेंगी एवं दान-पुण्य भी करेंगी। आपके विरोधी परास्त होंगे और आपका कार्यक्षेत्र विशालता को प्राप्त करेगा।

आपका भाग्योदय 19 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 28 वर्ष की अवस्था पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 37 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद

भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरध्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शांत स्वभाव एवं दृढ़तापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करने वाले होते हैं। इनकी प्रवृति भावुक होती है तथा प्रेम एवं स्नेह का निश्छल भाव इनके अंदर विद्यमान रहता है। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते है तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। धर्म के प्रति ये श्रद्धालु होते हैं तथा समाज एवं देश सेवा के कार्य में इनकी इच्छा रहती है। दूसरे लोगों की आंतरिक भावनाओं को समझने में ये चतुर होते हैं। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्र में उच्चाधिकार प्राप्त सम्मानित पद को अर्जित करने में सफलता प्राप्त करते हैं जिससे समाज में इनको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप सुदंर एवं दर्शनीय होगा तथा अन्य जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगी। आप एक विदुषी तथा बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी प्रायः अच्छी रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा।

लग्न में लग्नेश चन्द्रमा की राशि के प्रभाव से आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी एवं अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उत्साह तथा परिश्रम से करेंगी। इनमें आपको सफलताएं भी प्राप्त होगीं जिससे आपके सर्वत्र उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। धन एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आपकी बुद्धि श्रेष्ठ होगी तथा उत्कृष्ट कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर होंगी।

आप एक कर्तव्यपरायण महिला होंगी तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। इससे आपके कार्य क्षेत्र के प्रभाव में सतत वृद्धि होगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगी। साथ ही मित्रों में भी आप आदरणीय एवं सम्माननीय समझीं जाएंगी तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत होगा। संतति से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आप में कृतज्ञता की भावना भी विद्यमान रहेगी फलतः अन्य जनों के उपकार को आप स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक आभार प्रकट करेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा नियमित रूप से धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अवसरानुकूल सम्पन्न करती रहेंगी। जल क्रीड़ा के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इससे आपको आनंद की अनुभूति होगी। ज्यौतिष के प्रति भी आपकी श्रद्धा होगी तथा इसके ज्ञानार्जन में भी रूचिशील होंगी।

इस प्रकार आप शांत, दृढ़-प्रतिज्ञ, कर्तव्यपरायण, परिश्रमी एवं साहसी महिला होंगी तथा जीवन में सर्व सुखों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप कम बोलना पसंद करेंगी तथा सामान्यतया शान्त रहना ही आपको अच्छा लगेगा। आप आवश्यकता एवं अवसरानुकूल ही सार्थक वार्तालाप करेंगी। जीवन में वैभव शाली पदार्थों की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेगी। आपकी प्रवृति शीघ्र क्रोधित होने की रहेगी परन्तु शीघ्र क्रोधित होकर शीघ्र शान्त भी हो जाएंगी। परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को सुख सुविधाएं प्रदान करेंगी। आपको पैतृक सम्पति की भी प्राप्ति होगी तथा अन्य मूल्यवान धातु एवं द्रव्यों से भी युक्त रहेंगी।

जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप समय समय पर प्राप्त करती रहेंगी। साथ ही गृह एवं वाहन आदि का स्वामित्व भी आपको प्राप्त होगा। आपकी वाणी स्पष्ट रहेगी तथा अन्य जन आपकी मृदुवाणी से प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आपके ठोस तर्को से सभी लोग आपसे सामान्यतया सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप यथोचित व्यय करेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा धार्मिक कार्य कलापों का भी समय समय पर आयोजन करती रहेंगी। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन करने में भी समर्थ रहेंगी। इस प्रकार आप तथा भाग्यशाली, परोपकारी, धार्मिक प्रवृति से युक्त तथा समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति तीव्र रहेगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दार्शनिक या बौद्धिक कार्यो को करने में प्रवृत रहेंगी। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही अवसरानुकूल उनकी भलाई के कार्यो को सम्पन्न करती रहेंगी। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए परस्पर एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा यदा कदा अधिक वार्तालाप भी करेंगी। आपको अपने क्षेत्र में श्रेष्ठता या नेतृत्व प्राप्त होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही आप एक कुशल वक्ता होंगी तथा भाषा पर भी पूर्ण अधिकार रहेगा।

आधुनिक संचार की सुख सुविधाओं से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक टेलीफोन, दूरदर्शन या वाहन आदि का उपभोग करेंगी। आप संगीत प्रिय होंगी तथा कला के प्रति भी आपके मन में आकर्षण रहेगा आपका कंठ मधुर रहेगा फलतः अन्य लोग आपकी मधुर आवाज से प्रभावित रहेंगे। लेकिन सर्वप्रथम अपने सांसारिक कार्यो को पूर्ण करेंगी उसके बाद ही संगीत संबंधी कार्य सम्पन्न करेंगी। समय समय पर आपकी समीपस्थ यात्राएं होती रहेगी तथा इनसे आपको ख्याति तथा लाभ अर्जित होगा तथा पड़ोसियों से भी आप अच्छे संबंध स्थापित करेंगी । नीति की भी आप ज्ञाता होंगी तथा आम चुनाव, लेख लिखने या पुस्तक प्रकाशन आदि से लाभ तथा ख्याति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप शस्त्र विद्या की ज्ञाता, अच्छे शील स्वभाव एवं मित्रों से युक्त, सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा केतु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सांसारिक सुखों का उपभोग करने में समर्थ होंगी। आप समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों से युक्त रहेंगी परंतु पूर्ण रूपेण इनका उपभोग मध्यावस्था के बाद ही संभव होगा तथा इससे पूर्व आप अपनी योग्यता, बुद्धिमता एवं परिश्रम से इन्हें अर्जित करेंगी। अतः इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा ईमानदारी व तत्परता से अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

जीवन में आपको चल एवं अचल संपत्ति का स्वामित्व प्राप्त होगा विवाह के बाद भी पति के सहयोग या प्रभाव से आप प्रचुर मात्रा में धन संपत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी लेकिन विवादित संपत्ति से आपको हमेशा दूर रहना चाहिए तथा इसका क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए तथा इससे संबंध भी नहीं रखना चाहिए।

जीवन में आपको मध्यावस्था के बाद गृह सुख की प्राप्ति होगी एवं आपका घर सुन्दर आकर्षक एवं आधुनिक उपकरणों से सुशोभित होगा तथा इसकी सुन्दरता को बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से रूचिशील होंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा परंतु पड़ोसियों से संबंध सामान्य ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी आपको मिलेगा तथा सुख पूर्वक इसका उपभोग करने में समर्थ होंगी।

आपकी माताजी तेजस्वी शिक्षित बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से सभी जनों पर उनका प्रभाव रहेगा एवं सभी लोगो का पूर्ण ध्यान रखेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण सहयोग का भाव होगा तथा आपकी उन्नति में उनका काफी योगदान रहेगा। आपको अवसरानुकूल उनसे आर्थिक व नैतिक सहयोग की भी प्राप्ति होती होगी। आप भी उनका सुख दुख में पूर्ण ध्यान रखेंगी परंतु सैद्धांतिक मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। अतः ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए।

आप प्रारंभ से ही विद्याध्ययन में परिश्रम एवं पराक्रम से ही सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगी। यद्यपि छोटी कक्षाओं से आपको अच्छे अंक अर्जित हो जाएंगे। लेकिन स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में आपको प्रचुर मात्रा में परिश्रम करना पड़ेगा तभी स्नातक डिग्री मिल सकती है। यदि आप तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करें तो यहां आपको अल्प परिश्रम से ही सफलता मिलेगी तथा आप में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी जिससे जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी।

केतु की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से युवावस्था के बाद आप न्यूनाधिकरूप से रक्त चाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है। अतः यदि आप प्रारंभ से ही खाद्य पदार्थो का सीमित मात्रा में उपयोग करे तो ऐसी स्थितियों से आप अपने को सुरक्षित कर सकती है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा शनि भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप में बुद्धिमता का भाव विद्यमान होगा परंतु इससे तीक्ष्णता के भाव की कुछ अल्पता होगी जिससे शीघ्र निर्णय लेने या किसी गम्भीर समस्या का समाधान करने में आपको किंचित असुविधा की अनुभूति हो सकती है। लेकिन सामान्य कार्य कलाप आप बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ होंगी। शनि की पंचमभाव में स्थिति से वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म ग्रंथों में आपकी रूचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु इतिहास आदि के प्रति विशेष रूचि का प्रदर्शन कर सकती हैं तथा इस क्षेत्र में आपका शोध कार्य समाज के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अतः एक विदुषी के रूप में आपको सम्मान तथा प्रसिद्धि भी मिल सकती है।

शनि की वृश्चिक राशि में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगो में आपकी विशेष रूचि कम ही होगी क्योंकि आप भावुकता से दूर ही रहेंगी तथापि जो भी प्रेम-प्रसंग होंगे उसमें यथार्थ वादी दृष्टिकोण अपनाएंगी तथा यदि किसी कारण से कारण प्रेम-प्रसंग असफल भी हो जाता है तो उसका आप पर कोई प्रभाव नहीं होगा तथा आप अपना सामान्य समय व्यतीत करने में समर्थ होंगी।

पंचमभाव में शनि की स्थिति के प्रभाव से सन्तति प्राप्ति आपको विलम्ब से होगी तथा कुछ व्यवधान भी होंगे। लेकिन कन्या सन्तति के अधिक योग बनते है। आपकी सन्तति तेजस्वी पराक्रमी एवं व्यवहार कुशल होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। लेकिन वे सभी अपनी ही इच्छानुसार कार्य करने वाले होंगे तथा माता-पिता का कहना कम ही मानेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में आपकी कोई सलाह नहीं लेंगे लेकिन इसकी आपको कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतंत्र निर्णय लेने देने चाहिए। इससे आपसी विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा परन्तु वृद्धावस्था में बच्चों से विशेष अपेक्षाएं नहीं करनी चाहिए तथा अपना यथोचित मात्रा में धन संचित रखना चाहिए ताकि आपको अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़े।

अध्ययन के प्रति बच्चे विशेष उपलब्धि अपने पराक्रम एवं परिश्रम से ही अर्जित करने में समर्थ होंगे। हालांकि आप उनकी शिक्षा-दीक्षा का उचित प्रबन्ध करेंगी तथा आधुनिक परिवेश में उनको शिक्षा दिलाएंगी तथापि वे व्यावहारिक बुद्धि के होंगे अतः आजीविका अर्जन में उनको किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त तेजस्वी वृति के होने के कारण समाज में अन्य जनो से उनका समय-समय पर कोई वाद-विवाद भी हो सकता है। लेकिन आप अपने सद्व्यवहार से इसको सम्भालने में समर्थ होंगी तथा ऐसी स्थितियों से सुरक्षित रहेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक विदुषी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा शत्रुता के भाव की सामान्यतया उपेक्षा ही करेंगी। यद्यपि आप शान्ति पूर्वक समय व्यतीत करने की इच्छुक रहेंगी परन्तु आपके शत्रु एवं विरोधी लोग इसमें व्यवधान उत्पन्न करेंगे तथा आपके सम्मान में न्यूनता एवं सामाजिक स्तर पर उपेक्षा करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। अतः उनकी ऐसी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने के लिए कोर्ट में मुकद्दमे दायर कर सकती हैं। इस प्रकार आप दृढ़ता तथा बहादुरी से शत्रु वर्ग का सामना करेंगी तथा उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगी। इस कार्य में आपकी बुद्धिमता तथा सहमित्रों का मंडल भी सहयोग प्रदान करेगा। यदा कदा परिवार या बन्धु वर्ग से भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अन्ततोगत्वा इसमें आपको ही सफलता प्राप्त होगी। आप नैतिकता का अनुपालन करेंगी अतः शत्रु पक्ष का दमन करने के लिए नकारात्मक साधनों का कभी भी प्रयोग नहीं करेंगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति बनाने के लिए सर्वत्र यत्नशील रहेंगी।

आपका सेवक वर्ग भी आज्ञाकारी रहेगा तथा आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेगा। अपने सेवकों तथा सहायकों के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक तथा अपनत्व का रहेगा। जीवन में ऐसे अवसर अल्प मात्रा में ही आएंगे जबकि आपको ऋण की आवश्यकता पड़ेगी यदि आ भी गई तो आप ऋण से शीघ्र ही मुक्ति पा जाएंगी। आपको अपने मामा मामियों से अच्छे संबंध रखने चाहिए क्योंकि मामा से जीवन में आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी लेकिन मामियों के स्वभाव में भिन्नता के कारण यदा कदा इसमें न्यूनता आएगी तथा वे आपको अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगी।

यदा कदा जीवन में आपको मुकद्दमों आदि का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंत में विजय आपको ही होगी। इस प्रकार आप समाज में एक आदरणीय तथा सम्मानीय समझी जाएंगी तथा अपने अच्छे संबंधों से अन्य जनों से उचित सहयोग एवं आदर प्राप्त करेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा बृहस्पति भी सप्तम भाव में स्थित है। सामान्यतया मकर राशि के सप्तम भाव से जातक का सहयोगी चंचल वात प्रकृति एवं धनवान होता है परन्तु नीचस्थ बृहस्पति के प्रभाव से वह स्वभाव से चिड़चिड़ा अल्प बुद्धिमान एवं जीवन में परिश्रम से ही सफलताएं प्राप्त करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति चंचल एवं गंभीर स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्यो को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगे परन्तु अन्य लोग उनसे विशेष प्रसन्न नहीं होंगे। बृहस्पति के नीचत्व के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की भी न्यूनता होगी तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति विशेष सजग नहीं रहेंगे।

आपके पति का वर्ण गौरवर्ण होगा एवं कद भी मध्यम ही रहेगा। शारीरिक रूप से वह जलीय राशि एवं ग्रह के प्रभाव से स्थूल हो सकती है लेकिन पुष्टता बनी रहेगी जिससे शारीरिक आकर्षण बना रहेगा एवं उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। भौतिकता के प्रति उनका आकर्षण रहेगा तथा आधुनिक सुख साधनों तथा उपकरणों की प्राप्ति के लिए हमेशा चिंतित रहेंगे। स्वपरिश्रम एवं आपके सहयोग से न्यूनाधिक मात्रा में उनकी इच्छाएं अवश्य पूर्ण होंगी।

सप्तम भाव में नीचस्थ बृहस्पति के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा। आपका विवाह किसी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा परन्तु नीच बृहस्पति के प्रभाव से आप स्वेच्छा से प्रेम या अंर्तजातीय विवाह भी कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी होगा तथा एक दूसरे को सांसारिक क्षेत्र में पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे तथापि यदा कदा पति के चिड़चिड़े पन से आपको असुविधा की अनुभूति हो सकती है परन्तु ऐसी स्थितियों का सामना करने में आप पूर्ण समर्थ होंगी।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार से होगा तथा समाज में उनका प्रभाव सामान्य ही रहेगा। विवाह के अवसर पर मायके से आपको विशेष दहेज या धन सम्पति की प्राप्ति नहीं होगी एवं अन्यत्र भी बहुमूल्य उपहारों की न्यूनता होगी लेकिन आप सन्तुष्ट रहेंगी। सास ससुर से संबंध औपचारिक रहेंगे लेकिन एक दूसरे के अस्तित्व को अवश्य मानेंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति का विशेष सेवा भाव कम ही होगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा नहीं करेंगे जिससे वे उनसे अप्रसन्न होंगे। साथ ही साले एवं सालियां भी उनके शुष्क स्वभाव एवं वाणी से असन्तुष्ट रहेंगे एवं उन्हें वांछित सहयोग तथा सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण योजनाओं में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी एवं आपस में विश्वास के भाव में कमी होगी। अतः साझेदारी की उपेक्षा ही करें।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अध्यात्म, ज्यौतिष अथवा तंत्र मंत्र आदि पर विश्वास कम ही करेंगी क्योंकि आप एक व्यावहारिक महिला तथा अनावश्यक समय बर्बाद करना या स्वप्न देखना आपको उचित नहीं लगता तथा अपने पराक्रम एवं कार्य पर आपका पूर्ण विश्वास रहेगा। पैतृक सम्पत्ति की आपको प्राप्ति होगी लेकिन यह अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु इसका आप पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि आपके पास पहले ही प्रचुर मात्रा में धनऐश्वर्य रहेगा तथा आवश्यक सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगी। आप एक सिद्धांतवादी महिला होगी तथा दाम्पत्य जीवन भी अच्छा रहेगा।

जीवन में आपकी कुंडली के अनुसार आपके घर में चोरी आदि की भी संभावना रहेगी लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी क्योंकि पुलिस या अन्य सूत्रों से आपको अपना सामान सही सलामत वापस मिल जाएगा। बीमा आदि करने से भी आपको कोई विशेष लाभ नहीं होगा। अतः इस क्षेत्र में अनावश्यक पूंजी निवेश न करें तथा अन्यत्र उसका सदुपयोग करें।

शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा यत्नपूर्वक दुर्घटना आदि की उपेक्षा करनी चाहिए तथा इससे बचने के लिए आवश्यक रूप से तैयार रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सम्पूर्ण सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगी तथा इसके प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी। साथ ही ध्यान या समाधि आदि में भी रूचिशील रहेंगी तथा अन्तदृष्टि भी प्रबल रहेंगी। ज्योतिष या तंत्र मंत्र के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा इसका न्यूनाधिक ज्ञान भी रहेगा। आप नियमित रूप से पूजा अर्चना करेंगी तथा आध्यात्मिक विषयों का पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा इन पर धारा प्रवाह भाषण करने में भी समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी धार्मिक संस्था से सम्बन्धित हो सकती है तथा उसमें कोई उच्च या सम्मान्नीय पद भी प्राप्त कर सकती हैं ।

अपने व्यवसाय में आप कुशल रहेंगी तथा इससे समाज में इच्छित मान सम्मान एवं ख्याति अर्जित करेंगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही परिश्रम एवं लगन के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी तथा धार्मिक विषयों का व्यक्तिगत रूप से ज्ञान प्राप्त करेंगी। दैनिक पूजन सम्पन्न करने से आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति विकसित होगी तथा आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां सही सिद्ध होंगी।

लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको लाभ ऐश्वर्य एवं ख्याति प्राप्त होगी। साथ ही आप किसी दूसरे शहर या देश में किसी धार्मिक संस्था की स्थापना भी कर सकती हैं। आप परोपकार तथा सामाजिक जनों के हित कार्यो को करने में भी हमेशा तत्पर रहेंगी। पौत्रों से आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होगा तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों से इस जीवन में सुख ऐश्वर्य को अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक सन्तों के प्रति श्रद्धालु , मन्दिर, तालाब आदि परोपकार के कार्य करने वाली तथा आर्थिक रूप से समृद्ध रहकर अपना जीवन यापन करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही राहु भी दशमभाव को अपनी स्थिति से प्रभावित कर रहा है। मेष राशि अग्नितत्व एवं राहु वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक क्रिया के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा एवं इसमें समय समय पर आप परिवर्तन भी करती रहेंगी। साथ ही परिवर्तन से आपको समय समय पर लाभ भी होगा जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

आजीविका की दृष्टि से दशम भाव में मेषराशि में राहु की स्थिति के प्रभाव से आप वायु सेना, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम, भारी उद्योग में कर्मचारी, संदेश वाहक, दूत कार्य, विद्युत विभाग, राजनीति एवं प्रशासाकीय विभाग उचित एवं अनुकूल रहेंगे उपरोक्त विभागों में आजीविका के चयन से आपको यथोचित समय पर कार्य की प्राप्ति होगी तथा इसमें उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से आप सुरक्षित रहेंगी। अतः आपको यत्नपूर्वक इन्हीं विभागों एवं क्षेत्रों में कार्य करने का यत्न करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से लोहे का व्यापार, फैक्टरी, उद्योग, विद्युत उपकरणों का निर्माण, पेट्रोलपम्प, शराब का व्यापार, जुआ आदि से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगी। अतः यदि आप व्यापार में इच्छित उन्नति एवं धन अर्जित करना चाहते है तो आपको उपरोक्त पदार्थो का ही व्यापार करना चाहिए। इनमें व्यापार करने से आप अनावश्यक समस्याओं से सुरक्षित होंगी तथा भविष्य में भी आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी।

दशमभाव में राहु की स्थिति के प्रभाव से जीवन में आप मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही किसी अधिकार प्राप्त उच्चपद की भी प्राप्ति होगी जिससे आपके यश में वृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगी। लेकिन मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति में आपको विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है। अतः आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए। इसके अतिरिक्त क्लब आदि में भी आप पदाधिकारी हो सकती है।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं आकर्षक व्यक्तित्व के व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही उनके स्वभाव में क्रोध के भाव की भी प्रबलता होगी। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा एवं कार्यक्षेत्र में उच्च स्तर बनाने के लिए आपकी शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबंध करेंगी। उनके प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में इच्छित उन्नति सफलता एवं प्रतिष्में मेष राशि में केतु की स्थिति के प्रभाव से जीवन में आप वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही आपको सामाजिक यश की भी प्राप्ति होगी। आप एक अधिकार प्राप्त महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। नैसर्गिक पापी ग्रह केतु के प्रभाव से आप को उपरोक्त मान सम्मान प्रतिष्ठा एवं यश की विलम्ब से प्राप्ति होगी तथा इससे अनावश्यक व्यवधानों तथा समस्याओं का भी सामना करना पड़ेगा लेकिन इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम तथा

बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपकी जन्म कुंडली में एकादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपके मन में विभिन्न प्रकार की सांसारिक इच्छाएं विद्यमान रहेंगी तथा महत्वाकांक्षा के भाव की भी प्रबलता दृष्टिगोचर होगी। जीवन में अपनी इच्छाओं तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति परिश्रम एवं पराक्रम से करने में सफल रहेंगी। आपका धनार्जन उत्तम रहेगा तथा आय स्रोतों की भी अधिकता रहेगी। यद्यपि आपका धनार्जन उत्तम रहेगा लेकिन बचत की प्रवृत्ति भी आप में रहेगी। अतः आर्थिक रूप से आपको कभी कोई परेशानी नहीं होगी। आपको ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से इच्छित लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा आप भी उनको इच्छित मान सम्मान प्रदान करती रहेंगी।

आप सक्रिय प्रवृत्ति के लोगों को मित्र बनाने की इच्छुक रहेंगी तथा वे आपके लिए विश्वसनीय भी रहेंगे। मित्र मंडल में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा अपने कलात्मक कार्य कलापों से आप उनका मनोंरजन करने में तत्पर रहेंगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र कला संगीत या नाटक आदि के ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों से अधिक होगा तथा इन्हीं क्षेत्रों से जीवन में आपको इच्छित धनार्जन एवं लाभ भी होगा। इस प्रकार मित्रों से युक्त होकर प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा समाज में आदरणीया तथा प्रतिष्ठित महिला समझी जाएंगी। अन्य सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करना आप अपना परमप्रिय कर्तव्य समझेंगी तथा इसी परिपेक्ष्य में किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी होने की संभावना रहेगी। आप कभी कभी स्वयं ही एकाकीपन की अनुभूति करेंगी लेकिन आपका सामान्य जीवन भौतिक सुख संसाधनों से तथा अन्य वैभव से युक्त रहकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत का अनुपालन करने वाली महिला होंगी तथा जीवन में इसका अनुकरण करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आपकी सतर्कता बनी रहेगी। साथ ही ईमानदार होगी अतः बेईमानी करने वालों से आपको घृणा रहेगी। आपका धनार्जन स्वयं की योग्यता तथा परिश्रम से ही अर्जित होगा। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से भाग्यशाली महिला होंगी।

जीवन में आपको आर्थिक कष्ट की अनुभूति अल्प मात्रा में ही होगी वास्तव में आपकी आवश्यकताएं सीधी सादी एवं सीमित मात्रा में रहेंगी तथा भौतिकता पर आपका विशेष आकर्षण नहीं रहेगा। इससे आपका व्यय सीमित तथा नियंत्रित रहेगा। आप शीघ्र लाभ अर्जित की अपेक्षा दीर्घावधि लाभ की अधिक इच्छुक रहेंगी। धन संग्रह के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा व्यय के साथ बचत भी अवश्य करेंगी। इस प्रकार आपके समस्त पारिवारिक तथा अन्य व्यय आवश्यकता के अनुसार ही रहेंगे एवं इनमें अनावश्यक व्यय नहीं होगा जिससे आर्थिक सुदृढ़ता प्रायः बनी रहेगी साथ ही अपनी समृद्धि के द्वारा भविष्य के लिए कल्याणकारी योजनाओं पर भी व्यय करेंगी। इस प्रकार आप अपना धन बड़ी बड़ी कंपनियों पर लगाएंगी जहां से उचित लाभ प्राप्त होगा।

आपकी दूर समीप की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी जिनसे प्रारंभ में व्यय होकर भविष्य में लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इसके साथ ही आपकी विदेश संबंधी कोई लाभदायक एवं उन्नतिकारक यात्रा भी सम्पन्न होगी। इस प्रकार आप धन-वैभव से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करेंगी।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु नवम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि नवम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वादश भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि लग्न स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वादश भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। वर्ष के शुरुआत में सप्तम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप व्यापार में उन्नति करेंगे। अनुभवी लोगों कह सलाह अवश्य लें। व्यापार में आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या बिरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें अन्यथा परिणाम प्रतिकूल होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों व पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद राहु एवं गुरुग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपको कोई बड़ा निवेश न करें। यदि निवेश करना अत्यधिक जरूरी हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों से परामर्श लेकर निवेश करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे।

मई के बाद गुरुएवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपनी वौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि विवाह योग्य है तो विवाह हो सकता है। मई के बाद समय प्रभावित हो रहा है, अतः उस समय उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। किसी प्रकार की कोई चिंता परेशानी न होने के कारण आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आप अपने शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे।

मई के बाद आपका समय थोड़ा प्रतिकूल हो रहा है। उस समय छोटी-मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। द्वादशस्थ गुरुके पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक रोग या मौसम जनित बीमारियों से परेशानी उत्पन्न हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगी। पंचम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। यदि उत्तम शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ शुभ है।

मई के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल रोजगार प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु मई के बाद द्वादश स्थान के गुरु विदेश यात्रा करा सकते है।

नवम स्थान के शनि आपको लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की उनकी जन्मभुमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। मई के बाद गुरुग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान

पुण्य, भण्डारा इत्यादि धार्मिक कार्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली वस्तुएं जैसे दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले में धारण करें एवं राहु मन्त्र का पाठ करें।

इस वर्ष मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

02 जून के बाद समय अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा नयी योजनाओ को जन्म देगा जिसका लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यरहेगा।द्वादश स्थान केगुरु धनागम में रूकावट उत्पन्न करेंगे। जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है, परन्तु आपको मातुल पक्ष से लाभ होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको रूका हुआधन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुधारने में इनका पूर्ण सहयोग होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर भी पैसा खर्च करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह

के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत उत्तम रहेगा। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद करा सकता है।

02 जूनके बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपकेसम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान कीदृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थगुरुपर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएंहो सकती हैं।आपके बच्चों का स्वास्थ्य व शिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

02 जून के बाद गुरु के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है। तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केगुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रमण, सांस व पेट संबंधित बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है।

02 जून के बाद गुरु का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारिरीक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा रहेगा।षष्ठ स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को मनोनुकूल सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को वर्षारम्भ में नौकरी मिल सकती है।

02 जून केबाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है। द्वादशस्थगुरु विदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होगी।

02 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी दर्शा रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थगुरुएवं नवमस्थ शनि के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। 02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आपगुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। मन्त्र जाप कर आध्यात्मिक शक्ति को बढाएंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़िया रहेगा। व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से नयी योजनाओं से लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। आप कम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा।

साझेदारी में काम करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है। 26 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियो की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा, आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। रूके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी पत्नी के स्वास्थ पर भी धन का व्यय हो सकता है।

26 नवम्बर के बाद सामाजिक कार्यो में व धार्मिक कार्यो में पैसा खर्च कर सकते हैं। भाइयों या ससुराल पक्ष से भी धन लाभ हो सकता है। अचानक धन लाभ होने के भी योग बन रहे है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से जीवनसाथी कास्वास्थ्य खराब हो सकता है।

26 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद आपके सामाजिक मान संमान में और बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

संतान के लिये वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा।

26 नवम्बर के बाद दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। मन में अच्छे विचार आएंगे व आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे और प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसम जनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 26 जून के प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त हो सकती है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी। 03 जून के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहें है।

आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रूचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आप का अटूट विश्वास रहेगा। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 26 जून के बाद मन्त्र सिद्धी व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन राहु ग्रह का दान आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। भाइयों का सहयोग मिलेगा। सप्तम स्थान के राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं परन्तु आप उसे भी अपने बौद्धिक बल से अनुकूल बना लेंगे।

24 मई के बाद व्यवसाय में सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो 24 जुलाई के बाद अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आमदनी के नये स्रोत मिलने कि उम्मीद है। अनुभवी व्यापारिक एवं वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे। आपका मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। आप बचत करने में सफल रहेंगे। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकते हैं।

फरवरी के बाद आपको रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पिता का अहम सहयोग होगा। मातुल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा। मांगलिक कार्यों में भी पैसे खर्च हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। फरवरी के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय शुभ है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा चल रहा है यदि बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी।

राहु ग्रह के गोचर के साथ आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। यदि पहले से किसी बीमारी से ग्रसित हैं तो उससे छुटकारा मिल सकता है। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए सामान्य रहेगा। आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि शिक्षा की दृष्टि से उत्तम है।

24 मई के बाद षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों को ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से लम्बी यात्राएं व तीर्थ यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि, नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है, जिसके कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा। आप गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर गरीबों की सहायता भी करेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में बांट दें।
- दुर्गाजी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।
- गौ सेवा करें या गौशाला में चारा दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण सारे विरोधी शान्त होंगे। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अति उत्तम रहेगा। व्यवसाय में उन्नति के लिए नये-नये तरीके अपनाएंगे व सफल भी होंगे। आपको लाभ मिलता रहेगा। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की अच्छी उन्नति होगी। छठे स्थान का राहु आपको ब्राण्ड नेम भी दिला सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख सुविधा पर आप अधिक खर्च करेंगे। आय के स्रोत और उत्तम होंगे। निवेश के लिए समय अच्छा चल रहा है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की स्थिति पैतृक सम्पत्ति प्राप्ति के योग बना रही है। अचानक धनागम का योग बनेगा जिससे आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

08 अगस्त के बाद आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। यदि कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

तृतीयस्थ मंगल के प्रभाव से सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप

अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। माता-पिता के साथ भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। उच्च शिक्षा के लिए समय उत्तम नहीं है परन्तु प्रतियोगिता परीक्षा में आप सफल होंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

आपके बच्चों का किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ा रहे हैं जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते है, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

इस समय के अंतराल में आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आगे रहेंगे। अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में और अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अहं भाव ना आने दें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

29 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। 05 अक्टूबर के बाद तीर्थ यात्रा या परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी। किसी तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं तो उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें, अन्यथा उसमें व्यवधान आ सकता है। 25 अगस्त के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष आयोजन कर सकते हैं जैसे- भगवती जागरण, माता की चौकी इत्यादि।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं और केतु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। फरवरी से आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने काम को पूरा करके ही रहेंगे

17 अप्रैल से समय व्यावसायिक स्तर आपके लिए बेहतर होने वाला है। आपको पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। भले ही गुरु एवं राहु की युति थोड़ी अड़चने देगी किन्तु सफलता आपके कदम चूमेगी। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आय भाव पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। 04 फरवरी से आपकी आर्थिक उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। वित्तीय मामलों में आपको निराशा हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। आपकी राह में अवरोध उत्पन्न किया जा सकता है। जोखिम भरे कार्यो में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं।

01 मई से आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे यह समय आपके लिए लाभकारी रहेगा। यदि अनपेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिए मत अपितु उसका लाभ उठाएं। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी मौके आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। परिवार के प्रत्येक मसले पर आपको बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है।

मई से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा, क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो परिवार के लिए हितकर होंगे। परिवार के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान में गुरु चण्डाल योग संतान हानि का योग बना रहा है।

गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। अप्रैल के बाद सन्तान के लिए समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य रहेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप आलसी हो जाएंगे और आपके रवैये में भी परिवर्तन आएगा। आपको अपने खान-पान और दिनचर्या पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है ताकि आप इस तरह की भावनाओं से बच सकें। आपके जीवन में इस साल कुछ अच्छे पल भी आएंगे किन्तु ऐसा भी समय आएगा जब आप अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन से सम्बंधित चिंताओं से घिरे रहेंगे

स्वस्थ रहने के लिए आप योग और ध्यान का सहारा लें और प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएं। स्वास्थ्य को लेकर यह साल वैसे तो आपके लिए ठीक-ठाक ही रहेगा लेकिन अपने खान-पान को लेकर सतर्क रहें। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति उदर रोग दे सकती है। अतः मसालेदार या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम से कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रथम मास श्रेष्ठतम रहेगा परन्तु 04 फरवरी के बाद से समय प्रभावित हो रहा है। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। विदेश यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र भी ले सकते हैं और उस मन्त्र की साधना भी कर सकते हैं। पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा भी करेंगे। अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं और महालक्ष्मी मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- राहु ग्रह का दान करें और उसके मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा आप व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप अपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। चतुर्थ मंगल के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

09 अगस्त के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से आपका खुद का विकास होगा। आपका धैर्य आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए थोड़ा चिंताजनक हो सकता है क्योंकि राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपकी आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं है। 18 फरवरी के बाद अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है। परन्तु 14 जून से एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको कई अत्यंत लाभकारी अवसर भी मिलेंगे। अपनी समझ का सही उपयोग करेंगे।

15 अक्टूबर के बाद जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान के मंगल आपके घरेलू माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी माता स्वास्थ्य भी

अच्छा नहीं रहेगा। 18 फरवरी के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है।

09 अगस्त से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावुक लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके पिताजी एवं बड़े भाई के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों के स्वास्थ्य व शिक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। 18 फरवरी के बाद गर्भवती स्त्रियों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

09 अगस्त से बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी कम होगी और शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा। गर्भधान के लिए उत्तम समय रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान रह सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फिर भी आपको स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम करते रहना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। व्यापारिक व्यक्तियों के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

8 अगस्त के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 15 अक्टूबर से समय आपके लिए काफी बेहतर हो रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में कोई विदेश यात्रा का योग नहीं बन रहा परन्तु 18 फरवरी के बाद विदेश यात्राएं होंगी। राहु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। इस स्थानान्तरण से आप प्रसन्न नहीं रहेंगे।

14 जून से नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

तीर्थ यात्रा के भी योग बन रहे हैं। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु 18 फरवरी के बाद आप दान पुण्य करेंगे। राहु ग्रह के गोचर के बाद मन्त्र जप या साधना अधिक करेंगे। साधु, संन्यासी, देवता एवं अपने से बड़े लोगों में आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं एकादश भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुछठे भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

5 मार्च के बाद का समयआपकेकार्य-व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। परिश्रम की बदौलत उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपनी शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। अधिकारी आपसे प्रभावित होंगे और उनका अच्छा सहयोग भी मिलेगा।

किसी के साथ मिल कर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा।12 अगस्त से आपको किसी पर अत्यधिक विश्वास नहींकरना है,नहीं तो आपको धोखा मिल सकता है। 23 अक्तूबर से आपका समय अनुकूल हो रहा है फिर भी आपको सतर्क रहना चाहिए।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। एकादश स्थान का शनि आर्थिक उन्नति के लिए काफी शुभ है फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुवभी लोगों की सलाह अवश्य लें।

5 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। पुत्र एवं आपके मित्रों से अच्छा लाभ होगा। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन व्यय करेंगे। 12 अगस्त से 23अक्तूबर तक निवेश के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें। आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

गुरु के गोचर के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। वर्षान्त में आपके

परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बढ़िया नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुआपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी जिससे उनकीशिक्षा-दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही नकरें। दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता में कुछ अनुकूलता आएगी। आप स्वस्थ महसूस करेंगे परन्तु अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। पेट की तकलीफें व मोटापा बढ़ सकता है।व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए श्रेष्ठ रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत उत्तमरहेगा।विदेश में व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राओंके प्रबल योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर हो सकता है। 5 मार्च के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

यात्रा के दौरान या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें क्योकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के

कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है परन्तु 5 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपकी श्रद्धा और बढ़ेगी।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक जीवन में इस वर्ष आप कुछ विशेष करेंगे। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। कानून से जुड़े लोगों वकील, पुलिस आदि को लाभ की संभावना बन रही है। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका किसी से मतभेद हो सकता है। पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। वर्षान्त में किसी प्रकार का जोखिम न लें।

धन संपत्ति

आर्थिक उन्नति के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए अच्छी नहीं है। आय के कम एवं व्यय के ज्यादा योग बन रहे हैं। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसे न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 मार्च से आपका समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा हैं। धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आपके पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसे खर्च हो सकते हैं। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। ऐसी विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना चाहिए। छठे स्थान में वक्री मंगल आपके आय के स्रोतों में वृद्धि करेंगे। फिर भी आर्थिक स्थिति को लेकर सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव के कारण घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में न पड़ें। मार्च के बाद अपने दांपत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए आपको अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। इस समय आपके

ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मदभेद हो सकता है।

तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। भाई-बहनों का अच्छा सहयोग मिलेगा। समाज में आपका पराक्रम और बढ़ेगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होना आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा, जिसके कारण संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम है। परन्तु 18 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। आपको पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क जाना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

छठे स्थान में मंगल ग्रह के प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिसके कारण आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। 8 अक्टूबर के बाद वाहन इत्यादि से सावधान रहें और यात्रा भी कम से कम करें। नहीं तो शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता अभ्यार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है।

व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साइंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग

बन रहें है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। चोट चपेट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास होगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में संलग्न होंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को प्रेम सौहार्द के साथ मनाएंगे। 8 मार्च से आप दान पुण्य व दूसरों की सहायता अधिक करेंगे, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए शनि यन्त्र अपने पूजा घर में स्थापित कर उसकी पूजा करें।
- मदिरा व नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें।
- सरसों के तेल से निर्मित वस्तुओं को गरीब मजदूरों को खिलाएं।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों में दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक जीवन के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश शनि के कारण आप कुछ गलत फहमियों से व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। निश्चित तौर पर आपको बेहतर परिणाम मिलेगा। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें अन्यथा सकारात्मक परिणामों की जगह आपको नकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं एवं आप कानून की जद में आ सकते हैं। संचित धन का सही जगह उपयोग करें। सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। हालांकि मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो उसमें आपको हानि हो सकती है। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारु रूप से चलाते रहें। उसमें आपको सफलता मिल सकती है। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से बड़े व अनुभवी लोगों का साथ आपको अच्छी सफलता दिला सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको धोखा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्ग एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूवार्द्ध घर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पायेंगे। गृहस्थ जीवन की बात करें तो पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। आपका छोटे भाई-बहनों के साथ संबंध अच्छा रहेगा। दशम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि पिता के साथ कुछ मतभेद उत्पन्न करा सकता है और आप दोनों के बीच हमेशा कुछ न कुछ तनाव भी रहने वाला है। मार्च के बाद यह तनाव खत्म हो जाएगा और संबंधों में मधुरता आएगी

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य सम्पन्न करेंगे। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को सावधानी बरतें नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

28 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहे तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। 28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होनी प्रारम्भ हो जाएगी।

आप अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 12 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। अतः ज्यादा तेल युक्त आहार लेने से बचें। आँखों में समस्या हो सकती है और चश्मा भी लग सकता है। जिन लोगों को पहले ही चश्मा लग चुका है उनके चश्मे का नंबर बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यह समय माध्यमिक शिक्षा ग्रहण

कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनाएगा। 28 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको नीतियो में बदलाव करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ है। तृतीयस्थ राहु के कारण छोटी मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु 28 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा, जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रिया कम ही कर पाएंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका अच्छे कार्यों के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। आपके दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में सुधार होगा। गरीबों को दान देना व दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। मजदूरों को खाना खिलाकर व किसी की सहायता कर आप अत्यधिक संतुष्ट होंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को काला कम्बल दान करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान करें, जिससे आपकी शारीरिक व्याधियां दूर होंगी।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(28/07/2016 - 28/07/2032)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 28/07/2016 को आरम्भ तथा 28/07/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव जीवन साथी, व्यवसाय, कोर्ट-कचहरी के मामले, विदेश संबंध तथा विदेशों में अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जिसकी सप्तम भाव में स्थिति तथा एकादश, प्रथम और तृतीय भाव पर दृष्टि है। इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको बहुत ही आनन्द तथा शान्ति की प्राप्ति होगी और आप उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की सप्तम भाव, जो एक केंद्र है, में स्थिति तथा स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के द्योतक प्रथम भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको किसी भयानक विपत्ति से छुटकारा मिलेगा तथा इस दशा काल में कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको परेशान नहीं कर पाएगी और आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ सम्पत्ति :

गुरु, जो स्वभावत एक शुभ ग्रह है तथा जो दशम भाव (कर्म भाव) के स्वामी के अतिरिक्त सप्तम भाव का स्वामी होकर सप्तम भाव में स्थित है एवं सप्तम भाव से जिसकी दृष्टि एकादश भाव (आय भाव) पर है, आपको इस दशा काल में चल एवं अचल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का सुअवसर प्रदान करेगा तथा आरामदेह और शौकीन वस्तुओं को खरीदने में आपकी अक्षमता को कम करेगा।

व्यवसाय :

सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव तथा दशम अर्थात् कर्म भाव के स्वामी गुरु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपका व्यवसाय उत्तम होगा। आप व्यवसाय में लाभ प्राप्त करेंगे। आपको विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा। आप वाक्पटु होंगे और आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव में स्थित होने के कारण आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे और व्यवसाय में आपकी सहायता करेंगे। आपके जीवन साथी का व्यक्तित्त्व आकर्षक होगा। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपका पारिवारिक जीवन उन्नतिशील होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

गुरु का आपके व्यक्तित्व पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा और आप संत की तरह धार्मिक होंगे तथा शिक्षित व्यक्ति की तरह ज्ञान की खोज में अपनी पसंन्द के कारण अध्ययन से जुड़े रहेंगे।

अंर्तदशा :- गुरु - शुक्र
(10/06/2024 - 09/02/2027)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 28/07/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 10/06/2024 को प्रारंभ होकर 09/02/2027 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन सुखी रहेगा। विवाह हो सकता है। जीवनसाथी से खुशियां मिलेंगी, उनसे धन का लाभ हो सकता है। आकर्षक और मधुर व्यक्तित्व के लिए प्रसिद्ध होंगे। मुकदमे में जीत होगी। कर्ज़ की अदायगी कर सकेंगे। नेकी के कार्य करेंगे। भाग्य साथ देगा। कला में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता सफल होंगे, उनकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। माता धनी बनेंगी; वाहन और अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए निवेश से लाभ, संतान से खुशी, उत्तम शिक्षा, कला में रुचि, यात्रा, धन, सुख-साधन, अध्यात्म और धर्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान की कला में रुचि होगी; वे प्रसिद्ध और सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो सफलता आसानी से मिल जाएगी, यात्रा होगी, विभिन्न हॉबियों में हिस्सा लेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धन आएगा। परामर्शदाता और व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कन्याओं को खीर खिलाएं।

अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
(09/02/2027 - 28/11/2027)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 28/07/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 09/02/2027 को प्रारंभ होकर 28/11/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इव अवधि में आपकी प्रोन्नति हो सकती है। सम्मान में वृद्धि होगी। आयु में बड़े लोग और उच्चाधिकारी आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे। विदेश यात्रा हो सकती है। साझेदार से लाभ हो सकता है। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। व्यापार में लाभ होगा। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। विरोधियों पर विजय होगी। जीवन में प्रगति होगी। सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे, धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता को सफलता मिलेगी; उच्चपद प्राप्त करेंगे। माता अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के

लिए निवेश से लाभ, दान धर्म, लंबी यात्रा, भाग्य में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सुख-साधन संपन्न होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धन लाभ होगा; कार्यालय में वातावरण मित्रतापूर्ण होगा, सब कार्य सफलतापूर्वक संपन्न होंगे। परामर्शदाताओं के सम्मान में वृद्धि होगी, धनागम होगा। व्यापारी सफल रहेंगे, धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मामूली पित्त संबंधी व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- गुरु - चन्द्र
(28/11/2027 - 29/03/2029)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 28/07/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 28/11/2027 को आरंभ होकर 29/03/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी लाभकारी दूरस्थ स्थान की यात्रा होगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे। धनागम सरलता से होगा। संतान से सुख मिलेगा। बहुत से मित्र होंगे। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर होंगे, वे धनी बनेंगे। आपकी कला और खेलकूद में रुचि होगी। धर्म और अध्यात्म में दिलचस्पी हो सकती है। जनता की भलाई के कार्य करेंगे।

आपके जीवनसाथी को सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है।

आपके पिता के स्पर्धियों की संख्या में कमी आएगी, वे कला में रुचि लेंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं, अचानक लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, माता-पिता से लाभ, आत्म-विश्वास में वृद्धि, सुख-सुविधाओं और उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधा संपन्न होगा। परामर्शदाताओं के लाभ में वृद्धि होगी। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। कानों और शरीर के निचले अंगों की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरवजी की उपासना दूध से करें।

अंर्तदशा :- गुरु - मंगल
(29/03/2029 - 05/03/2030)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 28/07/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/03/2029 को प्रारंभ होकर वद 05/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। अप्रिय घटनाओं से बचें। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। स्पर्धियों पर विजय होगी। प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। तकनीकी विषयों और कृषि विज्ञान में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं।

मंगल की 11वें भाव पर दृष्टि के कारण आप धनी और सफल बनेंगे। प्रभाव में वृद्धि होगी; प्रत्येक कार्य निपुणता से करेंगे। मष्तिष्क लक्ष्य की ओर उन्मुख रहेगा।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे; स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। आपके पिता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। माता सफल रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, उत्तम शिक्षा, प्रसिद्धि, स्पर्धियों पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान को लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो परिवर्तन हो सकता है, खर्चे बढ़ेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। हृदय और छाती के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

योग

नीचभंग राजयोग

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः।
स चन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती।।
।। फलदीपिका।। अ. 7/श्लोक 26।।

यदि जन्मकाल के समय कोई ग्रह नीच राशि में स्थित हो तथा इस नीच राशि का स्वामी चंद्रमा से केंद्र में हो और जो ग्रह नीच है और उसका उच्चनाथ भी चंद्रमा से केंद्र में हो तो नीचता भंग हो जाती है। अर्थात् उत्तम राजयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र — योग की संभावना : 108 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निश्चय ही राजसुख का भोग करेंगे। सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होकर राजा के समान प्रतिष्ठित होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र — योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप

सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कपटी योग

पापे कर्मेश्वरे सौख्ये कपटी पापवीक्षिते पापसंयुते ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-141 ।।

यदि जन्मपत्रिका में दशमेश पाप ग्रह के साथ सुख स्थान में हो तथा पाप दृष्ट या पाप युक्त हो तो जातक कपटी होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,केतु,मंगल योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कपटी हो ऐसा प्रतीत होता है।

अनेक वाहन प्राप्ति योग

सौख्याधिपे शोभनखेचरेण भाग्येश्वरेणापि युतेथ वा स्यात् ।
सेनाबहुत्वं समुपैति जातो बहुत्वदेशाभरणानि यानम् ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-161 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश शुभ ग्रह हो तथा भाग्येश से भी युक्त हो तो जातक बहुत सेना तथा देश-विदेश के वस्त्राभरणभूषणवाहनादि से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सभी सुखों से युक्त होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

कारकस्थितराश्यंशनाथे केन्द्रत्रिकोणगे ।
बुद्धीश्वरेण संदृष्टे तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-36 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव कारक ग्रह जिसकी राशि अंशक में हो वह केंद्र या त्रिकोण में पंचमेश से दृष्ट हो तो तीव्रबुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध | योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीक्ष्ण बुद्धि वाले होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश

में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वदारा में आसक्त योग

गुरौ कलत्रे स्वदारसक्तः।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ-6/श्लो.-2।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमभाव में गुरु स्थित हो तो जातक अपनी स्त्री में आसक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मात्र अपने जीवनसाथी में आसक्त रहेंगे।

बहुस्त्री-कुटुम्बी योग

कलत्रे भानौ कुटुम्बी बहुदारसक्तः ।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ-6/श्लो.-3 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम स्थान में सूर्य स्थित हो तो जातक बहुत कुटुम्ब वाला तथा बहुस्त्री वाला होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बहु कुटुम्बी तथा आपके कई जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्वि-विवाहयोग

शुभग्रहेण संयुक्तः कलत्रेशेऽरिनीचगे।
पापे कलत्रराशिस्थे विवाहद्वयमादिशेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-18 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश शत्रु या नीच राशि में शुभ ग्रह से दृष्ट हो और सप्तम में पाप ग्रह हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,सूर्य,शनि योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो जीवनसाथी हो ऐसी संभावना है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,मंगल,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका

संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : शनि,चंद्र — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र,गुरु,बुध — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

स्त्री मृत्यु या अपुत्र योग

दारेशे सुतगे प्रणष्टवनितोऽपुत्रोऽथवा ।
।। फलदीपिका ।। अ.-10/श्लो.-2 ।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश संतान भाव में स्थित हो तो पत्नी या पुत्र मर जाता है।

योग कारक ग्रह : शनि — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी मर सकता है अथवा आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा संभाव्य है।

बहुस्त्री रत योग

जीवज्ञौ यदि वा निशाकरसितौ कामे बहुस्त्रीरतः।

।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-4।।

यदि जन्मपत्रिका में बुध और गुरु सप्तमस्थ हों अथवा चंद्रमा और शुक्र सप्तमस्थ हों तो बहुस्त्रीरतयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बहुत विपरीत लिंगी से युक्त रहेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु में विवाह योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 301-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में शुक्र और बुध सप्तम भाव में हो तथा शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह अधिक आयु में होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध,गुरु योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका विवाह अधिक उम्र में हो ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि

में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।